मोहाली एवं शिमला में आयोजित हुए प्रांतीय कार्यकर्त्ता सम्मेलन 6

अण्डमान प्रवास
चेतना केन्द्र का लोकार्पण एवं जनजातीय क्षेत्र में युगचेतना का विस्तार 7

चेतना दिवस
श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का हीरक जयंती उत्सव 8

शताब्दी वर्ष-2026

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

मध्य प्रदेश

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 नवम्बर 2025

वर्ष : 38, अंक : 10
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 12 नवम्बर 2025
वार्षिक चंदा : ₹ 80/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-
प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

युग निर्माण सत्संकल्प-14

परंपराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।

भगवान् ने मनुष्य को उचित-अनुचित का, लाभ-हानि का निष्कर्ष निकालने के लिए उपयुक्त बुद्धि दी है, लेकिन देखा यह जाता है कि दैनिक जीवन की साधारण बातों में जो विवेक ठीक काम करता है, वही महत्त्वपूर्ण समस्याएँ सामने आने पर कुंठित हो जाता है। परंपराओं की तुलना में तो किसी विरले का ही विवेक जाग्रत रहता है, अन्यथा आंतरिक विरोध रहते हुए भी लोग पानी में बहते हुए तिनके की तरह, भेड़ों के झुण्ड की तरह अनिच्छित दिशा में बहने लगते हैं।

समाज में प्रचलित कितनी ही प्रथाएँ ऐसी हैं, जिनमें लाभ रत्ती भर भी नहीं, हानि अनेक प्रकार से है, पर एक की देखा-देखी दूसरा उसे करने लगता है। नशे की प्रवृत्ति से शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य नष्ट होता है और आर्थिक स्थिति पर बुरा प्रभाव पड़ता है। इससे क्रोध, आवेश, चिंता, निराशा, आलस्य, निर्दयता, अविश्वास आदि कितने ही मानसिक दुर्गुण जन्म लेते हैं। हर नशेबाज इस लत की बुराई को स्वीकार करता है, पर विवेक की प्रखरता और साहस की सजीवता न होने के कारण कुछ कर नहीं पाता। क्या यही बुद्धिमत्ता है?

लोगों का अंधानुकरण करते हुए विवाह के समय जीवनभर की गाढ़ी कमाई फैशन, प्रदर्शन और मूढ़ परंपराओं में नष्ट कर देना कौन-सी समझदारी है! जेवर बनाने में आठ आने ही हाथ में आते हैं और जान का जोखिम, सुरक्षा की चिंता, लोगों की ईर्ष्या, अहंकार जैसी विपत्तियाँ होने पर भी विवेक को ताक पर रखकर परंपराएँ अपनाई जाती हैं।

शरीर के रोगी, मन के मलीन और समाज के कुसंस्कारी होने का एक ही कारण है-'अविवेक'। **आज हम बाहरी बातों पर खूब बहस करते हैं, पर जिस आधार पर हमारा जीवनोद्देश्य निर्भर है, उसकी ओर थोड़ा भी ध्यान नहीं देते। इसी का नाम है अविवेक। सीधी सादी विचारधारा को अपनाकर मनुष्य अपनी सर्वतोमुखी सुख शांति को सुरक्षित रख सकता है और इस धरती पर स्वर्ग का आनन्द प्राप्त कर सकता है, पर अविवेक के चलते ओंधी, टेढ़ी, अनुचित, अनुपयुक्त इच्छा, आकांक्षाएँ जीवन को जटिल और कठिन बनाती रहती हैं।**

परंपराओं की तुलना में विवेक का परास्त हो जाना वैसा ही आश्चर्यजनक है जैसा कि बकरे का शेर की गरदन मरोड़ देना। यह आश्चर्य की बात तो अवश्य है, पर हो यही रहा है। दूसरों को सुधारना कठिन हो सकता है, पर अपने को क्यों नहीं सुधारा जा सकेगा। अपने मन का, अपने दृष्टिकोण का परिवर्तन भी क्या हमारे लिए कठिन है? विवेक और विचारों की पूँजी का अभाव ही सारी मानसिक कठिनाइयों का कारण है। विवेक का अंतःकरण में प्रादुर्भाव होते ही कुविचार कहाँ टिकेंगे और कुविचारों के हटते ही अपना पशुवत जीवन, देव जीवन में परिवर्तित क्यों न हो जाएगा।

कुछ मूढ़ताएँ, अंध परंपराएँ, अनैतिकताएँ, संकीर्णताएँ हमारे सामूहिक जीवन में प्रवेश पा गई हैं। दुर्बल मन से सोचने पर वे बड़ी कठिन, बड़ी दुष्कर, बड़ी गहरी जमी हुई दीखती हैं, पर वस्तुतः वे कागज के रावण की तरह डरावनी होते हुए भी भीतर से खोखली हैं। विवेकशीलों के संगठित प्रतिरोध के सामने देर तक न ठहर सकेंगी। जिस नए समाज की रचना आज स्वप्न-सी लगती है, विचारशीलता के जाग्रत होते ही वह मूर्तिमान होकर सामने खड़ी दिखेगी।

हम न्याय, औचित्य और कर्त्तव्य को ही अपनायें

मनुष्यता की कसौटी

कर्मफल एक ऐसा अमिट तथ्य है, जो आज नहीं तो कल भुगतना ही पड़ेगा। कभी-कभी कर्म के परिणामों में देर इसलिए होती है कि ईश्वर मानवीय बुद्धि की परीक्षा लेना चाहता है कि व्यक्ति अपने कर्त्तव्य धर्म को समझ सकने और निष्ठापूर्वक पालन करने लायक विवेक बुद्धि संचित कर सका या नहीं। दंड, भय से तो विवेक रहित पशुओं को भी अवांछनीय मार्ग पर चलने से रोका जा सकता है। मानवीय अंतःकरण की विकसित चेतना तभी अनुभव की जा सकेगी, जब वह कुमार्ग पर चलने से रोके और सन्मार्ग के लिए प्रेरणा प्रदान करे। जो दंड, भय से डरे बिना दुष्कर्मों से बचने को मनुष्यता का गौरव समझता है और सदा सत्कर्मों तक ही सीमित रहता है, समझना चाहिए कि उसने सज्जनता की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है और पशुता से देवत्व की ओर बढ़ने का शुभारंभ कर दिया।

उन्नति को अपनाने वाला विवेक और कर्त्तव्य परायणता, मनुष्यता का आत्मिक स्तर विकसित होने की यह दो ही कसौटी हैं। इस आत्म-विकास पर ही जीवन के उद्देश्य की पूर्ति और मानव जन्म की सफलता अवलम्बित है। ईश्वर चाहता है कि व्यक्ति अपनी स्वतंत्र चेतना का विकास करे और विकास के क्रम से आगे बढ़ता हुआ पूर्णता का लक्ष्य प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करे। यदि हर काम का तुरंत दंड मिलता और ईश्वर बलपूर्वक अमुक मार्ग पर चलने के लिए विवश करता, तो फिर मनुष्य भी पशुओं की श्रेणी में आता, इसकी स्वतंत्र आत्मचेतना विकसित हुई या नहीं उसका पता ही नहीं चलता।

यदि ईश्वर को यह प्रतीत होता कि बुद्धिमान बनाया गया मनुष्य पशुओं जितना मूर्ख ही बना रहेगा, तो शायद उसने दंड के बल पर चलाने की व्यवस्था उसके लिए भी सोची होती। तब झूठ बोलते ही जीभ में छाले पड़ने, चोरी करते ही हाथ में फोड़ा उठने, कुदृष्टि डालते ही आँखें दुखने जैसी व्यवस्था बनी होती तो किसी के लिए भी दुष्कर्म करना संभव ही नहीं होता। ऐसी स्थिति में मनुष्य की स्वतंत्र चेतना, विवेक बुद्धि और आंतरिक महानता को विकसित होने का अवसर ही नहीं मिलता और आत्म विकास के बिना पूर्णता के लक्ष्य को प्राप्त कर सकने की दिशा में प्रगति ही न होती। अतएव परमेश्वर के लिए यह उचित ही था कि वह मनुष्य को अपना सबसे बड़ा, सबसे बुद्धिमान और सबसे जिम्मेदार बेटा समझ कर उसे कर्म की स्वतंत्रता प्रदान करे और यह देखे कि वह मनुष्यता का उत्तरदायित्व सँभाल सकने में समर्थ है या नहीं?

कर्मफल की व्यवस्थाएँ

प्रशासनिक दण्ड व्यवस्था : वैसे तो समाज में भी कर्मफल मिलने की व्यवस्था है और सरकार द्वारा भी उसके लिए साधन जुटाये गए हैं। पुलिस, जेल, कचहरी, कानून, नियंत्रण-निरीक्षण द्वारा ऐसे प्रबंध किये गए हैं कि अनाचार करने वालों को रोका और दण्डित किया जा सके। यद्यपि चतुर अपराधी तो सरकार की पकड़ में ही नहीं आते, लेकिन एक सरकारी व्यवस्था तो है ही, जो हजारों-लाखों कुमार्गगामियों को तिरस्कृत करने और दण्डित करने में लगी रहती है और किसी हद तक अपराधों की रोकथाम भी करती है।

असहयोग और तिरस्कार : मनुष्य की उन्नति पारस्परिक सहयोग पर निर्भर है। जिसे दूसरों का जितना गहरा प्यार और सच्चा सहयोग मिला, वह उतना ही उन्नतिशील बन सका है। यह लाभ कुकर्मियों को नहीं मिल सकता। उनसे सभी डरते हैं और सोचते हैं कि संपर्क बढ़ाने पर वह हमारे ही ऊपर घात चला सकता है। झंझट मोल न लेने की कायरता से डर कर कोई प्रत्यक्ष विरोध कर संघर्ष न करें, चुप भले ही बैठा रहे पर अनैतिक व्यक्ति को सच्चे मन से प्रेम कोई नहीं कर सकता। व्यभिचारी भी अपने घर में दूसरे व्यभिचारी का और चोर भी अपने घर में दूसरे चोर का प्रवेश नहीं होने देता।

दुष्कर्म छिपते नहीं, कुकर्म की दुष्प्रवृत्ति आखिर खुलकर ही रहती है। यह एक तथ्य है कि अनाचारी केवल घृणा के पात्र ही हो सकते हैं, उन्हें न तो सम्मान मिलता है और न सहयोग। इसके बिना न तो विकास संभव है और न आनंद की गुंजाइश है। कुकर्मी थोड़े से साधन भर इकट्ठा कर सकते हैं और उनसे यत्किंचित शरीर एवं इंद्रियों का क्षणिक सुख भोग सकते हैं, पर सामाजिक प्राणी होने के नाते जिस श्रद्धा, सम्मान, प्यार और सहयोग की उसे भारी भूख और आवश्यकता होती है, उनसे उन्हें सदा वंचित ही रहना पड़ेगा। सामाजिक असहयोग और तिरस्कार एक ऐसा दंड है जो प्रत्यक्ष होते हुए भी मनुष्य को घर में रहने वाले भूत, पिशाच की तरह संत्रस्त रखता है। यह स्थिति जेल का दंड भोगने वाले कैदी से कम कष्टकारक नहीं है।

आत्मप्रताड़ना : कुमार्गगामी आत्मप्रताड़ना के दंड से बच नहीं सकता। दूसरों से पाप को छुपाया भी जा सकता है पर आत्मा से वस्तुस्थिति कहाँ छिपती है? वह अनीति अपना कर बरती गई नीचता के लिए निरंतर धिक्कारती रहेगी और पश्चात्ताप की आग में पूरी तरह जलाती रहेगी। पापी मनुष्य एक क्षण के लिए भी शांति का अनुभव नहीं कर सकता। भीतर की प्रताड़ना बाहरी दंडों से अधिक हानिकारक होती है। उसके कारण व्यक्ति निरंतर दीन, दुर्बल, उद्विग्न, एकांकी, नीरस और विचित्र बनता चला जाता है। व्यक्तित्व को हेय, पतित और अस्त-व्यस्त बनाने में आत्मग्लानि ही सबसे बड़ा अवरोध सिद्ध होती है।

कर्मफल अकाट्य है

फिर ईश्वरीय विधान भी निःसत्व नहीं हुआ है। आज नहीं तो कल उसकी व्यवस्था के अनुसार कर्मफल मिलकर ही रहेगा; देर हो सकती है, अंधेर नहीं। सरकार और समाज से पाप को छिपा लेने पर भी आत्मा और परमात्मा से उसे छुपाया नहीं जा सकता। इस जन्म या अगले जन्म में हर बुरे-भले कर्म का प्रतिफल निश्चित रूप से भोगना पड़ता है। ईश्वरीय कठोर व्यवस्था उचित न्याय और उचित कर्मफल के आधार पर ही बनी हुई है, सो तुरंत न सही, कुछ देर बाद अपने कर्मों का फल भोगने के लिए हर किसी को तैयार रहना चाहिए।

मनुष्यता की कसौटी सन्मार्गगामिता है। विवेक की परख कुमार्ग से बचने में है। मानवीय गरिमा का तकाजा है कि हम न्याय, औचित्य और कर्त्तव्य को अपनायें। ना तो अशुभ सोचें और ना अनुचित कदम उठायें। इसी में बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता सन्निहित है।

वाङ्मय खण्ड 34 (भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्त्व), पृष्ठ 2.31-33 से संकलित, सम्पादित

राष्ट्रीय शौर्य समृद्धि गायत्री महायज्ञ शृंखला को प्रभावशाली बनाया जाये

युग साहित्य के स्वाध्याय तथा परम पूज्य गुरुदेव की योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए आगे आयें युवा

अग्नि परीक्षा की घड़ी

यह भारत के और भारत की देव संस्कृति के पुनर्जागरण की वेला है। दैवीय संकल्प के अनुरूप एक नई सांस्कृतिक चेतना के अभ्युदय के साथ नए भारत का निर्माण होता दिखाई दे रहा है। न जाने कितनी देवात्माएँ इस दैवीय संकल्प को पूरा करने में अपने-अपने क्षेत्रों में पूरी निष्ठा और समर्पण भाव के साथ एक नया इतिहास रच रही हैं। इस महान परिवर्तन की सूत्र संचालक ऋषिसत्ता परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के करोड़ों शिष्य, अनुयायी, अंग-अवयवों के लिए भी यह अत्यंत चुनौती भरा और विलक्षण सौभाग्यदायी अवसर है। यह अग्नि परीक्षा की वेला है, जिसमें देखा यह जाना है कि गुरुसत्ता के आशीर्वाद-अनुदानों से और अपनी निजी उपासना, साधना के प्रभाव से हमारे बंधन कितने टूटे। क्या हम अवसर को पहचान सके, अपनी विशेषताओं का बोध कर पाये, गुरुरूप में प्राप्त हुए महाकाल एवं महाकाली स्वरूप परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी की अवतारी चेतना को पहचान कर उनके दिव्य संरक्षण पर दृढ़ विश्वास रखते हुए उनके पदचिह्नों का अनुसरण कर सके या एक सामान्य मानव की भाँति सांसारिक बंधनों में ही उलझकर हीरे जैसे अनमोल जन्म को यूँ ही व्यर्थ गँवाते चले जा रहे हैं?

यह अखण्ड दीप और परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी की वेला है। यह स्वयं के मन, भावना और विचारों को अपनी गुरुसत्ता के विचारों और भावनाओं के साथ पूरी तरह मिला देने का अवसर है। सांसारिक अड़चनें तो आती ही रहेंगी, अच्छे कार्य में अवरोध तो उत्पन्न होते ही रहेंगे। बहती हुई नदी के मार्ग में अवरोध कम होते हैं क्या? नदी की सफलता और सार्थकता तब है जब वह हर अवरोध से टकराकर कल-कल निनाद की कर्णप्रिय ध्वनि उत्पन्न करते हुए अपने लक्ष्य की ओर निर्बाध गति से बढ़ती चली जाए। हर संघर्ष के साथ वह अधिक पवित्र और वेगवान होती जाती है।

खिलाड़ियों की प्रतिभा संघर्षों से गुजरकर ही निखरती है। लोहा तप कर ही फौलाद बनता है। सोने-चाँदी को आकर्षक आभूषण बनने के लिए तपना, गलना और मुड़ना ही पड़ता है। यदि यह भाव मन में रहे तो हमारे कदम लक्ष्य की ओर निर्बाध गति से बढ़ते ही जायेंगे।

इस वर्ष के विशेष कार्यक्रम

आगामी वर्ष वसंत पंचमी पर शान्तिकुञ्ज में आयोजित होने जा रहे जन्मशताब्दी वर्ष के प्रथम समारोह से पूर्व राष्ट्र की चेतना को संगठित, सबल बनाने के लिए अनेक आध्यात्मिक एवं जनजागरण परक कार्यक्रमों की शृंखलाएँ चलाई गई हैं। 'आपके द्वार पहुँचा हरिद्वार' के अंतर्गत देवस्थापना एवं सद्ग्रंथ स्थापना, नशामुक्त भारत अभियान, जन्मशताब्दी ज्योति कलश यात्राएँ ऐसे ही अभियान थे, जिन्होंने करोड़ों लोगों का ध्यान युगशक्ति गायत्री और ऋषियुग्म परम पूज्य गुरुदेव-माताजी के विचारों की ओर आकर्षित किया।

वसंत पंचमी पर जन्मशताब्दी समारोह से पूर्व हर वर्ष की भाँति गायत्री महायज्ञों की शारदीय शृंखला आरंभ हो रही है। इस शृंखला में 24 से लेकर 251 कुण्डीय तक के राष्ट्रीय शौर्य समृद्धि गायत्री महायज्ञ आयोजित किये जा रहे हैं। इस वर्ष के कार्यक्रम उनके नाम के अनुरूप राष्ट्र की शौर्यशक्ति और सर्वांग समृद्धि, सुख-शान्ति के लिए समर्पित होंगे। इन कार्यक्रमों में राष्ट्रीय उत्कर्ष के लिए सामाजिक चेतना के संगठन-सशक्तीकरण हेतु विशेष प्रेरणा, प्रार्थना और संकल्पों का प्रावधान रखा गया है। आज असुरता को निरस्त कर सामाजिक समरसता और सद्भावना के साथ मानवता के उत्थान की भावनाएँ हर हृदय में उमड़-घुमड़ रही हैं। राष्ट्रीय शौर्य समृद्धि गायत्री महायज्ञों का लक्ष्य उन सभी सृजनशील, राष्ट्रभक्त, संस्कृतिनिष्ठ लोगों तक परम पूज्य गुरुदेव के युगांतरीय विचार पहुँचाना है।

परम पूज्य गुरुदेव के विचार युग परिवर्तन का क्रांतिकारी आधार हैं। ये जहाँ जाते हैं, वहीं एक नई सृजनचेतना खड़ी हो जाती है। राष्ट्रीय शौर्य समृद्धि गायत्री महायज्ञों को इन्हें भारत के अभ्युदय के लिए संकल्पित और प्रयत्नशील हर व्यक्ति तक पहुँचाने का प्रभावशाली माध्यम बनना चाहिए। यह केवल गायत्री यज्ञों की शृंखला नहीं है, इसके अंतर्गत युवा सम्मेलन, नारी सम्मेलन, कन्या-किशोर कौशल शिविर, विभिन्न संस्कार शिविर आदि अनेक कार्यक्रम सम्पन्न होने हैं। यह सभी कार्यक्रम राष्ट्र की सृजनशील प्रतिभाओं को परम पूज्य गुरुदेव के विचारों के साथ जोड़ने का माध्यम बनें। परम पूज्य गुरुदेव के विचारों की सृजनात्मक शक्ति को एक उदाहरण से समझें।

गुरुदेव के विचारों की अद्भुत शक्ति

गायत्री परिवार, कोटा (राजस्थान) की एक प्रखर, प्राणवान कार्यकर्त्री हैं डॉ. हेमलता गाँधी। पिछले 22 वर्षों से राजस्थान सरकार के आजीविका मिशन, शहरी गरीबी उन्मूलन एवं शहरी आवास अधिकारी हैं। परम पूज्य गुरुदेव के विचारों से जुड़ने के बाद उन्होंने जो क्रान्ति की है, वह सभी के लिए प्रेरणादायी है। वे बताती हैं-

मुझे मोटिवेशनल बुक्स पढ़ने का बहुत शौक था। मैंने कार्ल मार्क्स, लेनिन, अरस्तु सहित कई विदेशी और भारतीय अध्यात्मवेत्ताओं को पढ़ा, लेकिन मुझे संतुष्टि नहीं होती थी। लेकिन जब मैंने परम पूज्य गुरुदेव की पुस्तक 'हमारी वसीयत और विरासत' पढ़ी तो मुझे उनकी और भी पुस्तकें पढ़ने की अभीप्सा जागी। मैं उनकी पुस्तकें पढ़ती गई तो मुझे उनकी महानता का आभास हुआ। मैंने प्रतिदिन उनके साहित्य के स्वाध्याय का नियम बना लिया। मैंने उनके 62 वाङ्मय पढ़ लिये हैं।

पूज्य गुरुदेव के विचारों ने मुझे एक नई ऊर्जा से भर दिया। मैंने अंतःप्रेरणा से गायत्री के अनुष्ठान आरंभ किये। मैं अपने आप को अत्यंत गौरवशाली अनुभव करती हूँ कि मुझे ऐसे गुरु मिले हैं, जो अपने विचारों से हमें पूरे विश्व में पहुँचा रहे हैं। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी को पढ़ने से मेरी वैश्विक सोच (ग्लोबल थॉट) विकसित हुई है।

मैं समझती हूँ कि आज राष्ट्र निर्माण की जो भी योजनाएँ चलाई जा रही हैं, उनकी प्रेरणा कहीं न कहीं पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के साहित्य में निहित है। मैं देख रही हूँ कि भारत के अभ्युदय के लिए आज जो चिंतन उभर रहा है, जो योजनाएँ बन रही हैं, उन सबका उल्लेख परम पूज्य गुरुदेव ने अपने वाङ्मय में पहले से ही किया हुआ है। मोदी जी आज वसुधैव कुटुम्बकम् (वन अर्थ, वन फैमिली, वन नेशन) की बात कह रहे हैं, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने दुनिया के एकीकरण की बात तो बहुत पहले से कही है। जननी सुरक्षा योजना, जननी आवास योजना, स्वच्छता अभियान, कुपोषण निवारण, ये सब गुरुदेव के **'हमारे शत सूत्रीय कार्यक्रम'** में शामिल हैं।

समय की माँग और भावी कार्यक्रम

आज के डिजिटल युग में युवा पीढ़ी एक नए तरह का दृष्टिकोण रखती है। उसे दृष्टिगत रखते हुए हमें उन योजनाओं को रूपांतरित करना पड़ेगा। मैंने उन्हें रूपांतरित करके 124 लक्ष्य निर्धारित किए हैं। इनमें मेरी प्राथमिकता इनोवेशन एण्ड रिसर्च की है। परम पूज्य गुरुदेव ने अपने जीवन को प्रयोगशाला बनाया था, वैसे ही हम अपने जीवन को आध्यात्मिक, सामाजिक प्रयोगशाला बनायें। हम इनोवेशन एण्ड रिसर्च में जितना आगे बढ़ेंगे, देश उतना आगे जाएगा। गुरुदेव के विचार थे कि हमारे इनोवेशन और रिसर्च साइंटिफिक स्पिरिचुएलिटी बेस्ड हों, वैज्ञानिक अध्यात्मवाद पर आधारित हों। हमें आत्मविज्ञान पर काम करना होगा, तब विश्व बंधुत्व की संकल्पना साकार होगी।

आज के युवा आत्मवत् सर्वभूतेषु की अवधारणा पर कार्य करें। यूरोप, जापान, फ्रांस, अमेरिका; व्यक्ति कहीं का भी हो, हम सब एक हैं, इस विचारधारा को लेकर चलें। आज सुपर पावर वही देश है जो पूज्य गुरुदेव की बतायी एकता, समता, शुचिता, ममता की भावना को लेकर चल रहा है, वही देश टिकेगा।

डॉ. हेमलता गाँधी बताती हैं कि निःसंदेह गायत्री उपासना और स्वाध्याय से शौर्य का जागरण होता है। पहले मैं अपने पिता जी से बात करने में भी झिझकती थी, आज गुरुदेव के विचारों से जुड़ने के बाद मुख्यमंत्री सहित अतिविशिष्टों के कार्यक्रमों के संचालन में संलग्न हूँ, जिससे लोग प्रेरित और प्रभावित होते हैं।

समाज निर्माण में योगदान

डॉ. हेमलता गाँधी को नारी सशक्तीकरण के लिए दिये जाने वाले तीनों राज्य स्तरीय सर्वोच्च पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, ये हैं-(1) डॉ. भीमराव अंबेडकर महिला कल्याण पुरस्कार, (2) महिला शक्ति पुरस्कार (अंतर्राष्ट्रीय दिवस पर) तथा (3) बेटी गरिमा पुरस्कार। शान्तिकुञ्ज के स्वावलम्बन केन्द्र से प्रेरणा और प्रशिक्षण लेकर वे अपनी शासकीय सेवाओं के माध्यम से ही स्वावलम्बन के 28 प्रकल्प चलवा रही हैं। उन्होंने 250 महिलाओं को प्रशिक्षण देकर स्वावलम्बी बनाया। 35 से 40 हजार बेटियों तक परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य पहुँचाया है। 25000 महिलाओं को सेल्फ हेल्प ग्रुप से जोड़ा है।

जिनके समक्ष समस्याएँ थीं, जो गायत्री उपासना के लिए सहज तैयार नहीं थीं, ऐसी कई बेटियों और महिलाओं को गायत्री साधना करने के लिए प्रेरित कर उनकी समस्याओं का समाधान कराया।

युवाओं की सामर्थ्य

डॉ. हेमलता गाँधी की तरह ही आज पूरे देश में लाखों युवा गायत्री परिवार और परम पूज्य गुरुदेव के विचारों से जुड़ कर राष्ट्र के नवनिर्माण में अत्यंत सृजनात्मक भूमिका निभा रहे हैं। वर्षों से गायत्री परिवार द्वारा चलाए जा रहे विभिन्न रचनात्मक आन्दोलनों ने समाज में शान्ति, सद्भाव, सृजनशीलता को बढ़ावा देने में अद्वितीय भूमिका निभाई है। कोटा में डॉ. हेमलता गाँधी की तरह श्रीमती रेखा पटवा, श्रीमती रानी भूटयानी, श्रीमती इंदु त्यागी, श्रीमती उषा राठौर आदि की टीम क्रमशः बाल निर्माण, ज्ञानयज्ञ, बंदियों के उत्थान तथा गर्भ संस्कार योजना पर क्रांतिकारी कार्य कर रही हैं। आवश्यकता है ऐसे सृजनशील लोगों को संगठित कर उन्हें परम पूज्य गुरुदेव की शत-सूत्री युग निर्माण योजना से जोड़ा जाये। इन दिनों आयोजित हो रहे राष्ट्रीय शौर्य समृद्धि गायत्री महायज्ञों में इस दिशा में प्रभावशाली प्रयोग किये जा सकें तो यह समाज, राष्ट्र और संस्कृति की बहुत बड़ी सेवा होगी।

कृपया समय पर पाक्षिक प्रज्ञा अभियान की सदस्यता का नवीनीकरण करा लीजिए

पाक्षिक प्रज्ञा अभियान युग चेतना विस्तार का अत्यंत क्रान्तिकारी माध्यम है। परिजन इसे घर-घर पहुँचा रहे हैं। यज्ञ, गोष्ठियों के आमंत्रण के साथ और विभिन्न कार्यक्रमों में सैकड़ों की संख्या में पाक्षिक की प्रतियाँ बाँटी जा रही हैं। पाक्षिक के समस्त सदस्यों/वितरकों से निवेदन है कि चूँकि अधिकांश लोगों की सदस्यता नवम्बर-दिसम्बर में समाप्त हो जाती है, अतः वे अपनी सदस्यता का नवीनीकरण अभी से करा लें।

नोटः सदस्यता समाप्ति की तिथि पते वाले लेबल पर लिखी होती है।

संपर्क सूत्र : 9258369725 (Whatsapp)

पाठकों की असुविधा के लिए हमें खेद है

पाठकों को एक पते पर 25 या उससे अधिक प्रज्ञा अभियान रजिस्टर्ड डाक से भेजे जाते रहे हैं, लेकिन भारत सरकार के डाक सेवा विभाग द्वारा विगत सितम्बर माह से रजिस्टर्ड डाक सेवा बंद कर दी है, जिसका कोई ठोस विकल्प अभी तक नहीं सुझाया गया है। बीच में कुछ समय पाक्षिक भेजने का अवसर मिला, लेकिन डाक विभाग के सॉफ्टवेयर में समय-समय पर हो रहे बदलाव के कारण ये सेवाएँ बाधित ही हो रही हैं। इससे केवल पाक्षिक प्रज्ञा अभियान ही नहीं, मथुरा से भेजी जाने वाली अखण्ड ज्योति और युग निर्माण योजना पत्रिका सहित देश के सभी पत्र-पत्रिकाओं की सेवाएँ प्रभावित हुई हैं, जिसके संदर्भ में केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री ने प्रेस कॉन्फ्रेंस भी की है।

पाठकों को हो रही असुविधा के प्रति शान्तिकुञ्ज पूरी तरह से संवेदनशील है। प्रतिदिन इस समस्या के समाधान के लिए डाक विभाग से संपर्क रखकर प्रयास किये जा रहे हैं। क्या विकल्प होगा, यह अभी तक स्पष्ट नहीं हो पाया है। चूँकि ये सेवाएँ कम्प्यूटराइज्ड होती हैं, अतः जब तक कम्प्यूटर पर वैकल्पिक सेवा की व्यवस्था उपलब्ध नहीं होती, तब तक पाठकों को पाक्षिक समय पर नहीं मिल पाने की असुविधा होना स्वाभाविक है।

चूँकि समाचार पत्र सामयिक होते हैं, अतः किसी वैकल्पिक व्यवस्था से इन्हें पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास भी किया जा रहा है। आशा करते हैं कि डाक विभाग इन्हें पाठकों तक समय पर सकुशल पहुँचा देगा।

परिजनों से निवेदन है कि यदि आपके क्षेत्र के कोई परिजन शान्तिकुञ्ज आते हों और अपने क्षेत्र के पाक्षिक हाथोंहाथ ले जाने में समर्थ हों तो प्रज्ञा अभियान कार्यालय से अवश्य संपर्क कर लें।

नई व्यवस्था सुनिश्चित करने के प्रयास जारी हैं। क्या व्यवस्था होगी, यह पाठकों को सूचित किया जायेगा। इस बीच पाठकों को हो रही असुविधा के लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं।

विनीत : संपादक, प्रज्ञा अभियान, शांतिकुंज

‘युवा चेतना से राष्ट्र चेतना’ एवं ‘व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण’ के साथ सम्पन्न हुआ

मध्य प्रदेश का प्रांतीय युवा चिंतन शिविर

भोपाल। मध्य प्रदेश : अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा शारदा विहार आवासीय विद्यालय, केरवा में 27 से 29 अक्टूबर तक आयोजित तीन दिवसीय ‘प्रांतीय युवा चिंतन शिविर’ अकूत उल्लास और अद्भुत सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। राज्य के मुख्यमंत्री माननीय श्री मोहन यादव, गायत्री परिवार के आत्मीय सदस्य, पूर्व मुख्यमंत्री माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान, समर्पित स्वयंसेवक केन्द्रीय मंत्री श्री दुर्गादास उइके, भूतपूर्व सांसद डॉ. रामकृष्ण कुसमरिया जी का विशेष मार्गदर्शन मिला। प्रदेश भर से हजारों चयनित युवा प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया।

इस शिविर में अखण्ड दीप एवं परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी के संदर्भ में ‘युवा चेतना से राष्ट्र चेतना’ और ‘व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण’ के लक्ष्य को केन्द्र में रखते हुए आगामी चार वर्ष (2026-30) के लिए ‘यूथ विजन’ की रूपरेखा निर्धारित हुई। शिविर के मुख्य पथ प्रदर्शक पूरे विश्व में देव संस्कृति की कीर्ति पताका को फहरा रहे अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा आदर्श आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, प्रति कुलपति देव संस्कृति विश्वविद्यालय थे।

युग निर्माण के सत्संकल्पों के आधार पर होगा नए युग का निर्माण : डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

समापन समारोह के मंच पर मान. श्री शिवराज सिंह जी, श्री योगेन्द्र गिरि एवं अन्य

प्रांतीय युवा चिंतन शिविर में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने प्रथम दिन विचार क्रांति अभियान की प्रतीक लाल मशाल प्रज्वलित कर एवं धर्म ध्वजारोहण करते हुए कार्यक्रम का औपचारिक उद्घाटन किया। इस अवसर पर प्रदेशभर से आए युवाओं द्वारा सप्त क्रांति अभियान एवं रचनात्मक कार्यक्रमों की थीम पर आधारित परेड आयोजित की गई थी। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने उसका निरीक्षण किया। इस अवसर पर कार्यक्रम स्थल ‘युवा चेतना से राष्ट्र चेतना’ एवं ‘व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण’ के उद्घोषों से गुंजायमान होता रहा।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने की। उन्होंने कहा कि जन्मशताब्दी वर्ष युवाओं से राष्ट्र निर्माण के संकल्प का आह्वान कर रहा है। नए युग का निर्माण परम पूज्य गुरुदेव द्वारा बताये 18 सत्संकल्पों के आधार पर होना है। इन्हीं युग निर्माण सत्संकल्पों के माध्यम से हमें विचार क्रान्ति अभियान को जन-जन तक पहुँचाना है। इस अवसर पर माननीय मुख्यमंत्री श्री मोहन यादव जी एवं केन्द्रीय मंत्री श्री दुर्गादास उइके जी युवाओं का मार्गदर्शन करने के लिए विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

दीपयज्ञ की दिव्य प्रेरणाएँ

प्रथम दिन की सायंवेला में राष्ट्र जागरण दीपमहायज्ञ का भव्य आयोजन हुआ। देवमंच के सामने सजी सुंदर रंगोलियाँ और कार्यक्रम स्थल पर सुंदर आकृतियों में प्रज्वलित लाखों दीपमालाएँ उपस्थित युवाओं के अंतर्मन और संकल्पों को प्रतिबिंबित कर रही थीं।

इस अवसर पर डॉ. चिन्मय जी ने सभी को परम पूज्य गुरुदेव के तप की ऊर्जा तथा परम वंदनीया माताजी के स्नेह से स्वयं के जीवन को ज्योतित कर समाज में व्याप्त अवांछनीयताओं के अंधियारे को दूर करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि हमें साधना को अपने जीवन की धुरी बनाना होगा। गुरुदेव के विराट व्यक्तित्व को स्वयं समझें और जन-जन को समझाएं। साहित्य पढ़ें-पढ़ाएं और गुरु कार्य में साझेदार बनें।

राष्ट्र के नवनिर्माण का संकल्प समारोह

29 अक्टूबर को कार्यक्रम के समापन एवं विदाई समारोह में भारत सरकार के कृषिमंत्री एवं प्रदेश में अत्यंत लोकप्रिय पूर्व मुख्यमंत्री माननीय श्री शिवराज सिंहं चौहान तथा शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी की मुख्य उपस्थिति रही। सदैव की भाँति माननीय श्री शिवराज जी ने स्वयं को परम पूज्य गुरुदेव का अनन्य सेवक-शिष्य बताया तथा उपस्थित युवा साथियों से समाज में व्याप्त भेदभाव को मिटाने के लिए एकजुट होने का आह्वान किया। इस अवसर पर युग निर्माण सत्संकल्पों के साथ राष्ट्र निर्माण में साझेदारी के संकल्प दोहराए गए।

शिविर की सफलता के लिए प्रांतीय संगठन में युवा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री विवेक चौधरी, प्रांतीय प्रभारी श्री राजेश पटेल, जोन, उपजोन, जिला संगठनों से जुड़े समस्त कार्यकर्त्ताओं ने अथक परिश्रम किया। शान्तिकुञ्ज की ओर से जोन प्रभारी श्री जगदीश कुल्मी जी, युवा प्रकोष्ठ प्रभारी श्री केदार प्रसाद दुबे जी, श्री आशीष सिंह के सतत मार्गदर्शन एवं प्रत्यक्ष उपस्थिति में यह कार्यक्रम अभूतपूर्व सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

राष्ट्र-निर्माण में गायत्री परिवार की भूमिका हृदय जैसी हैः माननीय मुख्यमंत्री, म.प्र.

माननीय मुख्यमंत्री जी ने कहा कि मध्य प्रदेश देश का हृदय है और देश के परिप्रेक्ष्य में गायत्री परिवार की भूमिका हृदय जैसी है। जिस तरह हृदय शरीर के रक्त को शुद्ध कर जीवन बढ़ाता है, उसी प्रकार गायत्री परिवार समाज, संस्कृति और संस्कारों को पुष्पित-पल्लवित कर समाज में नई ऊर्जा का संचार कर रहा है। आत्म निर्माण, राष्ट्र निर्माण और युग निर्माण की गतिविधियाँ, जो इस शिविर के माध्यम से संचालित हो रही हैं, देश के हृदय-स्थल से संचालित होना गर्व का विषय है।

गायत्री परिवार केवल एक संस्था नहीं, बल्कि एक जीवन दर्शन है : डॉ. चिन्मय जी

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने कहा कि गायत्री परिवार केवल एक संस्था नहीं, बल्कि एक जीवन दर्शन है। उन्होंने युवाओं को गायत्री परिवार के मूल मंत्र ‘हम बदलेंगे-युग बदलेगा’ की प्रेरणा देते हुए कहा कि युग परिवर्तन की शुरुआत स्वयं व्यक्ति के भीतर से होती है।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने प्रतिभागी युवाओं को परम वंदनीया माता जी के जन्म शताब्दी वर्ष में निर्धारित सप्त क्रांति आंदोलन (स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वावलंबन, नारी जागरण, व्यसनमुक्ति-कुरीति उन्मूलन, पर्यावरण संरक्षण आदि) के लिए संकल्पित किया।

सामाजिक विषमताओं के खिलाफ एकजुट हो राष्ट्र की युवा शक्ति : मान. शिवराज सिंह जी

प्रांतीय युवा चिंतन शिविर के समापन दिवस के मुख्य अतिथि भारत सरकार के कृषि मंत्री एवं मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान थे। उन्होंने युवा शक्ति को राष्ट्र निर्माण की सबसे बड़ी ताकत बताते हुए युवाओं को सामाजिक विषमताओं के खिलाफ एकजुट रहने का संदेश दिया और कहा कि एक लकड़ी नहीं, लकड़ी का गट्ठर बन जाओ। अगर एक लकड़ी है तो कोई भी तोड़ देगा, लेकिन लकड़ी का गट्ठर बाँध दिया तो कोई तोड़ सकता है क्या? उन्होंने युवाओं को अवांछनीयताओं के विरुद्ध सविनय अवज्ञा के लिए भी तैयार रहने की बात कही।

शक्तिपीठ दर्शन एवं एकात्म धाम में पूजन, कार्यकर्त्ताओं का सम्मान एवं मीडिया संवाद

शक्तिपीठ में कार्यकर्त्ताओं का सम्मान

प्रांतीय चिंतन शिविर के लिए भोपाल गए डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी भोपाल में गायत्री शक्तिपीठ, एम.पी. नगर में भी गए। वहाँ चल रही रचनात्मक गतिविधियों से परिचित हुए। इस अवसर पर उन्होंने स्थानीय परिजनों से आत्मीय भेंट की एवं उन्हें सम्मानित भी किया। डॉ. चिन्मय जी एकात्म धाम, भोपाल पहुँचे, शंकराचार्य जी की विशाल प्रतिमा के समक्ष प्रार्थना की। एकात्म धाम परिसर में उपस्थित पूज्य संत जनों से आत्मीय संवाद हुआ। डॉ. चिन्मय जी ने विस्तार न्यूज चैनल में एक विशेष साक्षात्कार भी दिया।

नवयुग के प्रेरणादीप

युग साहित्य के विस्तार का अनूठा जुनून, अद्भुत समर्पण

आदित्य सरकार, बरेली, उ.प्र.

सोशल मीडिया के सदुपयोग से मिल रही है शानदार सफलता

26 वर्षीय चि. आदित्य अपने घर को एक शक्तिपीठ की तरह गुरुकार्यों के लिए समर्पित कर साहित्य विस्तार पटल चलाने वाले श्री आर.के. सरकार का इकलौता पुत्र है। शारीरिक रूप से बहुत कमजोर, ठीक ढंग से चलने-फिरने और बोलने में भी कठिनाई होती है, लेकिन गुरुकार्यों के प्रति उसकी निष्ठा और समर्पण ने नई राहें बना लीं। उसने गायत्री मंत्र लेखन अभियान का वैश्विक विस्तार करने और देश-दुनिया में परम पूज्य गुरुदेव के साहित्य को पहुँचाने में अद्वितीय सफलता पाई है।

चि. आदित्य सरकार सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स-व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, फेसबुक और लिंक्डइन के माध्यम से गुरुदेव के साहित्य का प्रचार-प्रसार कर रहा है, जिससे उसे देश ही नहीं, विदेशों से भी ऑनलाइन ऑर्डर्स प्राप्त होने शुरू हो गए। वह स्वयं के अनुभवों के साथ गायत्री मंत्रलेखन के प्रभाव से लोगों को अवगत करा रहा है और स्वयं गुरुदेव की पुस्तकों का अध्ययन कर उनके मार्मिक विचारों के साथ लोगों को युग साहित्य पढ़ने के लिए लगातार प्रेरित कर रहा है।

पिछले डेढ़ वर्ष में उसने शारजाह, दुबई, कनाडा, मलेशिया, अमेरिका सहित अनेकों देशों में 5 लाख से भी अधिक मूल्य का प्रज्ञा साहित्य भेजा है। परिजन उसकी त्वरित सेवाओं से बहुत प्रभावित हैं। वैश्विक स्तर पर गायत्री मंत्र लेखन का तो एक सशक्त अभियान चल पड़ा है। आदित्य के अनुसार विगत तीन-चार माह में ही उनके द्वारा विश्व के कई देशों में 10,000 से अधिक मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ भिजवाई गई हैं। तमाम शारीरिक अक्षमताओं के बावजूद जिस उत्साह और समर्पण भाव से उसने अपने पिता के ज्ञानयज्ञ अभियान को नई दिशा और नई ऊँचाई प्रदान की है, वह सचमुच में प्रशंसनीय है, हर युवा के लिए प्रेरणादायक है।

- चि. आदित्य ने इस दीपावली पर आकर्षक पैकिंग के साथ युग साहित्य के गिफ्ट हैंपर तैयार किये, जिनकी बहुत माँग रही।
- इन दिनों वे युग निर्माण सत्संकल्प के प्रचार प्रसार पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। प्रबुद्ध वर्ग के लोग इन्हें बहुत पसंद कर रहे हैं। कमिश्नर रैंक तक के 250 से अधिक लोग यह सत्संकल्प मँगा चुके हैं।
- प्रत्येक ऑनलाइन ऑर्डर भेजते समय पाक्षिक प्रज्ञा अभियान और युग निर्माण सत्संकल्प पत्रक निःशुल्क रखा जाता है।

श्री आर.के. सरकार बरेली में साहित्य विस्तार पटल चला रहे हैं। वे इफको में सीनियर मैनेजर, आई.टी. के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं। परम पूज्य गुरुदेव के अनंत अनुदानों से अनुप्राणित श्री आर.के. सरकार बताते हैं कि उनका जीवन गुरुकार्यों के लिए ही समर्पित है। उनकी सेवाएँ विशुद्ध रूप से ज्ञान क्रांति का माध्यम हैं, जीविकोपार्जन का साधन नहीं। वे शांतिकुंज या गायत्री तपोभूमि मथुरा से साहित्य पर मिलने वाले कमीशन के साथ उसे ग्राहकों को देते हैं।

श्री आर.के. सरकार के विस्तार पटल ने अमेजॉन और फ्लिपकार्ट जैसे ऑनलाइन माध्यमों पर परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य उपलब्ध कराया। उन्हें उनकी साहित्य सेवाओं के लिए श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी द्वारा सन् 2017 में शान्तिकुञ्ज में ‘युग व्यास स्मृति सम्मान’ प्रदान किया गया। चि. आदित्य द्वारा साहित्य विस्तार पटल की जिम्मेदारियाँ सँभाल लेने के बाद अब वे ज्ञानरथ पर अपना समय देने लगे हैं।

तेरा तुझको अर्पण ...

श्री आर.के. सरकार पर गुरुदेव-माताजी के अनन्त अनुदान बरसे हैं। उनसे जो मिला है, उसे ही वे भगवान के खेत में बो रहे हैं। वे अपने संस्मरण बताते हुए भावुक हो जाते हैं। उन्होंने बताया -

एक बार अपनी शारीरिक अक्षमता के कारण आदित्य गिर गया था, उसे काफी चोट आई। हॉस्पिटल में एडमिट कराने पर डॉक्टरों ने बताया कि उसकी दोनों आँखों की रोशनी चली गई है, जो लौटेगी नहीं। हृदय को गहरा आघात लगा, लेकिन डॉक्टरों की बातों से ज्यादा गुरुदेव पर विश्वास था। मैं सबको हॉस्पिटल में छोड़कर घर आ गया और पूजा स्थली पर बैठकर गुरुदेव से प्रार्थना करता रहा। गुरुकृपा से चमत्कार हो गया, उसी शाम को आदित्य की आँखों की रोशन आ गई।

प्रज्ञा अभियान की सदस्यता/नवीनीकरण के लिए बैंक खाता विवरण : SHRI VEDMATA GAYATRI TRUST (TMD) SBI AC : 306 3160 6578 (11 Digit) IFSC : SBIN0010588
इस बैंक अकाउंट में धनराशि जमा कराकर ट्रांस्फर प्रूफ और अपना पता पिनकोड व मोबाइल नंबर सहित व्हॉट्सएप : 9258369725 पर अथवा pragyaabhiyan@awgp.org पर भेज दें।

ज्योति पर्व के प्रकाश में हुई गतिविधियाँ

शरद पूर्णिमा के दिन 'ज्योति त्रिपथ' का लोकार्पण

सेंधवा, बडवानी। मध्य प्रदेश

गायत्री धाम सेंधवा द्वारा सेंधवा नगर में पुराने ए.बी. रोड पर परम पूज्य गुरुदेव की 'ज्ञान यज्ञ की लाल मशाल' की भव्य प्रतिमा स्थापित की गई है। शरद पूर्णिमा के दिन इसका समारोह पूर्वक अनावरण किया गया। इस अवसर पर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री वीरेन्द्र तिवारी, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष श्री अंतर सिंह आर्य, नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती बसंती बाई जी की विशेष उपस्थिति रही। अब इस चौराहे को 'ज्योति त्रिपथ' के नाम से जाना जाएगा। आयोजन में हजारों की संख्या में विशिष्ट अतिथि, परिजन एवं नगरवासी उपस्थित थे।

नगर के प्रतिष्ठित तिराहे पर स्थापित हुई विचार क्रान्ति की प्रतीक लाल मशाल

गायत्री धाम के श्री मेवालाल पाटीदार ने अतिथियों के द्वारा ज्योति त्रिपथ पर स्थापित भव्य 'लाल मशाल' का पूजन वंदन और अनावरण करवाया। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने इस अवसर पर कहा कि यह आस्था और विश्वास को जाग्रत् करने वाली मशाल है, जो हजारों यात्रियों को सन्मार्ग पर चलने के लिए सदैव प्रेरित करती रहेगी।

चंद्रालय ध्यान कुटिया का लोकार्पण: गायत्री धाम द्वारा पाँच एकड़ कृषि भूमि में चंद्रालय ध्यान कुटिया का निर्माण करवाया गया, जिसका नामकरण असमांक ऋषि के नाम से किया गया। प्राकृतिक मौलिकता से युक्त यह कुटिया ध्यान में दिव्य आनन्द की अनुभूति कराने वाली है। श्री मेवालाल पाटीदार जी के साथ शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री वीरेन्द्र जी तिवारी, उपजोन समन्वयक श्री पन्नालाल जी बिरला, महेंद्र भावसार, जिला समन्वयक बड़वानी आदि ने प्रथम प्रवेश कर इस कुटिया का लोकार्पण किया।

गुरुकुल के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम: शरद पूर्णिमा पर्व के रात्रि कालीन उत्सव में गुरुकुल विद्यालय के बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया, जिसमें व्यसन मुक्ति, मोबाइल के दुष्परिणाम, हरीतिमा संवर्धन, स्वावलंबन इत्यादि विषयों पर सुंदर और प्रेरणाप्रद प्रस्तुतियाँ दी गईं।

श्वास, दमा, कफ के रोगियों के लिए औषधियुक्त खीर का वितरण: चौबीस कला चंद्र की किरणों को देशी गाय की खीर में विलय करके, आयुर्वेदिक औषधि मिलाकर विशेष रूप से श्वास, दमा और कफ के रोगियों के स्वास्थ्य संवर्धन हेतु खीर वितरित की गई। कार्यक्रम के अंत में श्री मेवालाल पाटीदार जी के द्वारा चन्द्र आरती एवं शान्तिपाठ किया गया।

सुरभि सम्मान से किया सम्मानित

गायत्री परिवार ट्रस्ट मंडल के द्वारा शरद पूर्णिमा के पावन अवसर पर पर्यावरणविद एवं ऑर्गेनिक कृषि के ज्ञाता श्री जगदीश जी देवड़ा, कन्या कौशल शिविर की बहिन कुमारी सविता जाट और वनांचल के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने वाले कस्तूरबा आश्रम, निवाली को सुरभि सम्मान-2025 से सम्मानित किया गया।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा 2024-25

पुरस्कार वितरण और शिक्षक सम्मान समारोह

भद्रक। ओडिशा

भद्रक स्थित गीता भवन परिसर में 19 अक्टूबर को भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा-2024-25 का जिला स्तरीय पुरस्कार वितरण एवं श्रीराम शर्मा उत्कृष्ट सेवा शिक्षक सम्मान समारोह आयोजित हुआ। आयोजन में कक्षा पाँच से कॉलेज तक के नौ वर्गों में प्रथम तीन वरीयता प्राप्त 29 छात्रों को सम्मानित किया गया। पुरस्कार स्वरूप उन्हें प्रमाण पत्र, ट्रॉफी एवं प्रज्ञा साहित्य प्रदान किया गया।

समारोह में भा.सं.ज्ञा.प. के संचालन में सहायता करने वाले 12 शिक्षकों को 'श्रीराम शर्मा उत्कृष्ट सेवा शिक्षक सम्मान' से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों की सर्वाधिक संख्या वाले विद्यालय के प्राचार्य, परीक्षा आयोजक एवं सहायता देने वाले गायत्री परिजनों को भी सम्मानित किया गया।

मुख्य अतिथि डिप्टी कलेक्टर श्री कार्तिक मंडल जी ने भा.सं.ज्ञा. परीक्षा की उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इससे छात्रों के व्यक्तित्व का निर्माण तो होता ही है, वे दुर्व्यवहार और अवसाद से भी मुक्त होंगे।

विशेष अतिथि राज्य विज्ञान अकादमी के सदस्य इंजीनियर श्री अभय सुतार, भद्रक जिले के सेवानिवृत्त शिक्षा अधिकारी श्री आनन्द चंद्र दास एवं सेवानिवृत्त प्राचार्य श्रीमती जानकी लता पाधी ने भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा पर अपने विचार प्रस्तुत किये। भा.सं.ज्ञा.प. के प्रांतीय समन्वयक श्री प्रफुल्ल दास जी एवं श्रीयुक्त पांडव जेना जी ने सभी बच्चों को प्रेरणाप्रद मार्गदर्शन प्रदान किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता जिला पंचायत अध्यक्ष श्री के.के. नारायणन ने की। भा.सं.ज्ञा.प. के जिला समन्वयक कुशदेव मलिक ने गणमान्य अतिथियों का परिचय कराया। कार्यक्रम की सफलता में श्री केदार नाथ महापात्रा, संयोजक प्रफुल्ल राउत, श्री मनोरंजन महापात्रा, मंजुलता मिश्रा, पद्मावती सामल, लोसाना राउत, मंजुलता नायक और गायत्री परिवार के अन्य सदस्यों का सहयोग प्राप्त हुआ।

भद्रक के समारोह में पुरस्कृत शिक्षकगण एवं विद्यार्थी

केवलारी, सिवनी। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ केवलारी में 9 अक्टूबर 2025 को 'श्रेष्ठ शिक्षक एवं मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह' का भव्य आयोजन हुआ। इसमें प्रतिभावान विद्यार्थियों एवं भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में विशिष्ट योगदान देने वाले शिक्षकों को सम्मानित किया गया। परीक्षा के प्रत्येक वर्ग में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय रहे 24 विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र, शील्ड एवं नकद राशि दिये गए। उनके अलावा 324 ऐसे विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया, जिन्होंने दसवीं और बारहवीं की परीक्षा में 80% से अधिक अंक प्राप्त किए थे। भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में विशिष्ट योगदान देने वाले शिक्षकगण भी सम्मानित किए गए।

मुख्य अतिथि बीईओ श्री डी. एल. तिवारी और एसडीओपी श्री आशीष भराडे की उपस्थिति में यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे श्री नरेन्द्र हिंग्वे ने विद्यार्थियों को माता-पिता और गुरुजनों के सम्मान को सच्ची शिक्षा का मूल बताया।

सम्मानित हुई विशिष्ट प्रतिभाएँ

केवलारी में सुश्री आरती करवेटी (डीएसपी के लिए चयनित), सुश्री निकिशा बघेल (सहायक संचालक वाणिज्यकर अधिकारी), श्री अभय राहंगडाले (जीएसटी इंस्पेक्टर) सहित विविध प्रतियोगी परीक्षाओं में चयनित अधिकारी, डॉक्टर एवं इंजीनियरों को भी गायत्री परिवार की ओर से सम्मानित किया गया।

दीपयज्ञ में झलकी भारतीय संस्कृति की दिव्य आभा

बोस्टन में दीपोत्सव मनाया

बोस्टन। अमेरिका : दीपावली के पावन अवसर पर गायत्री परिवार, बोस्टन के द्वारा द्वारकामाई विद्यापीठ (साईं मन्दिर) में भव्य दीपयज्ञ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में भारतीय मूल के 500 से अधिक श्रद्धालुओं ने भाग लिया। श्री गणेश एवं माता लक्ष्मी का विधिवत पूजन अर्चन किया गया। दीपयज्ञ में सभी ने पूर्ण उत्साह एवं उल्लास के साथ मन्दिर में सैकड़ों दीप जलाए तथा गायत्री मंत्र एवं महामृत्युंजय मंत्र से आहुतियाँ प्रदान कीं।

कार्यक्रम का शुभारम्भ दीप प्रज्वलन एवं प्रज्ञा गीतों की भावाञ्जलि के साथ हुआ। यज्ञ में भाग लेने वाले गायत्री परिजनों ने अपनी अनुभूतियाँ साझा करते हुए बताया कि उस समय उन्हें पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माता जी की सूक्ष्म उपस्थिति एवं शान्तिकुञ्ज की दिव्यता का आभास हुआ। शान्तिपाठ के उपरांत अमृतमय प्रसाद का वितरण हुआ। सभी को प्रज्ञा पुस्तकें वितरित की गईं।

दीपावली उत्सव के माध्यम से युगऋषि के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय कार्य गायत्री परिजनों के द्वारा किया गया। बोस्टन निवासी समर्पित कार्यकर्त्री बहिन संगीता सक्सेना एवं उनके पति श्री संजय सक्सेना का आयोजन में विशेष योगदान रहा।

34 महिला बंदियों ने गायत्री महामंत्र की दीक्षा ली

आरा। बिहार : 16 अक्टूबर को मंडल कारा, आरा में आध्यात्मिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कारागृह की 34 महिला बंदी बहिनों को गायत्री मंत्र की दीक्षा दी गई। सभी को सम्मानपूर्वक गायत्री मंत्र की चादर भी ओढ़ाई गई तथा पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित साहित्य उपलब्ध कराया गया।

इस कार्यक्रम ने बंदी बहिनों में उत्साह, उल्लास एवं आत्मविश्वास का संचार किया। सभी बहिनों ने इस आयोजन के लिए गायत्री परिवार का धन्यवाद किया। सबके चेहरे पर प्रसन्नता साफ दिखाई दे रही थी। इस पुनीत कार्य में मंडल कारा की अधिकारी सुश्री रीना कुमारी का विशेष योगदान प्राप्त हुआ।

कार्यक्रम के आयोजन में श्रीमती रीना सिंह ने मुख्य भूमिका निभाई। कुसुम त्रिपाठी, राम श्रृंगेरी देवी, प्रभा तिवारी, अनीता शर्मा आदि बहिनों का सहयोग प्राप्त हुआ।

आश्रय गृह में रह रही बहिनों के चेहरों पर बिखेरी मुस्कान

चेतना दिवस पर दीपयज्ञ

बोरीवली, मुम्बई। महाराष्ट्र

दिया, मुम्बई ने रूप चतुर्दशी-19 अक्टूबर के दिन अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख मार्गदर्शक श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का 75वाँ जन्मदिवस 'चेतना दिवस' के रूप में मनाया। इस उपलक्ष्य में रेस्क्यू फाउंडेशन, बोरीवली आश्रय गृह में आध्यात्मिक कार्यक्रम एवं चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। रेस्क्यू फाउंडेशन की संस्थापिका सुश्री त्रिवेणीबेन आचार्य की उपस्थिति में दीपयज्ञ का आयोजन हुआ, श्रद्धेय के उत्तम स्वास्थ्य के लिए महामृत्युंजय मंत्र से आहुतियाँ प्रदान की गईं।

रेस्क्यू फाउंडेशन मानव तस्करी से पीड़ित महिलाओं के बचाव, पुनर्वास और स्वदेश वापसी के कार्य में वर्षों से संलग्न है। इस कार्यक्रम ने आश्रय गृह में रह रही सभी बहिनों के हृदयों को उल्लास और शांति से भर दिया। उदास एवं चिंतित चेहरे दीप्तिमान मुस्कान में बदल गए। सभी पर पुष्पवर्षा कर उनका उत्साहवर्धन किया गया।

इस अवसर पर रेस्क्यू की गई बहिनों के लिए चिकित्सा शिविर का भी आयोजन हुआ, जिसमें सामान्य

रेस्क्यू फाउण्डेशन के आश्रय गृह में आयोजित दीपयज्ञ के अवसर पर आश्रित बहिनों पर की गई पुष्पवर्षा

स्वास्थ्य, मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य, दंत स्वास्थ्य इत्यादि की जाँच की गई। फाउंडेशन के द्वारा रेस्क्यू की गई एक महिला की नर्सिंग की पढ़ाई हेतु आर्थिक सहायता के लिए प्रतिबद्धता दी गई। आयोजन के पश्चात् सभी को सूखे मेवे, स्वच्छता किट, प्रज्ञा साहित्य और गायत्री चालीसा भेंट की गई। सभी ने गायत्री परिवार के प्रति आभार प्रकट किया।

बच्चों ने साक्षात देवी के रूप में माताओं के पाँव पखारे

पुणे। महाराष्ट्र

प्रज्ञा बाल संस्कार केन्द्र, मुंढवा में चातुर्मास एवं नवरात्रि के पावन अवसर पर नौ दिवसीय सामूहिक साधना, गायत्री यज्ञ एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु विविध गतिविधियों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मातृशक्ति की आदर्श परम वंदनीया माताजी को श्रद्धांजलि अर्पित करने के भाव से मातृपूजन एवं कन्या पूजन के कार्यक्रम आयोजित हुए। सभी साधक-श्रद्धालुओं ने कन्या भ्रूण हत्या एवं दहेज प्रथा को रोकने के लिए समाज में जागरूकता बढ़ाने का संकल्प लिया।

छोटे बच्चों ने किया मातृ-पूजन

बाल संस्कार केन्द्र के बच्चों ने उपस्थित सभी माताओं का पूजन किया। पवित्र तीर्थ जल से उनके चरण धोए तथा उन पर पुष्पवर्षा कर उन्हें सम्मानित किया। बच्चों को अपनी माता को साक्षात देवी के रूप में देखने और उनकी पूजा करने की प्रेरणा दी गई, उन्हें अपनी माताओं के प्रति कर्तव्य का बोध कराया गया।

बच्चों द्वारा देव झाँकियों की प्रस्तुति

नन्हीं बालिकाओं ने शैलपुत्री से महागौरी तक नौ देवियों की सुन्दर एवं अद्भुत झाँकियाँ प्रस्तुत कीं। दशहरे के दिन बच्चों ने श्रीराम, लक्ष्मण, माता सीता एवं हनुमान जी का रूप धारण कर उनकी लीलाओं का मंचन किया एवं राम अवतार की सुन्दर झाँकी प्रस्तुत की।

कार्यक्रम में कुमारी अनन्या, श्रावणी, कृतिका, ओवी, रावी, नक्षत्रा, आरोही, कोमल, प्रिशा, हर्षवर्धन, राजवर्धन, समर्थ तथा सार्थक ने झाकियाँ प्रस्तुत कीं तथा रेखा ताई, सारिका, श्रुतिका एवं अन्य परिजनों का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

गुरुदेव के जीवन पर भाषण प्रतियोगिता

बगोदर, गिरिडीह। झारखण्ड

गायत्री परिवार बगोदर ने घाघरा स्थित शुभम् आदर्श विद्यालय में पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी की जीवनी पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया।

मृत्यु की निकटता से चिंतित न होओ। वह पुराना कपड़ा बदलकर नया पहनने जैसी उत्साहवर्धक स्थिति है। तुम्हारी सत्ता तो अमर है।

संगठन, प्रशिक्षण और जनजागरण

नारी उत्कर्ष एवं नारी जागरण कार्यशाला

कार्यशाला में दस नये महिला-प्रज्ञा मण्डलों का गठन किया गया।

अनूपपुर। मध्य प्रदेश

गायत्री चेतना केन्द्र, अनूपपुर में 12 अक्टूबर को जिला स्तरीय नारी उत्कर्ष एवं जागरण कार्यशाला का आयोजन हुआ, जिसमें 150 से अधिक बहिनों एवं 50 से अधिक भाईयों ने भाग लिया। इसमें देश की आधी जनशक्ति-नारी को शिक्षित, पूर्ण स्वास्थ्य, स्वावलंबी और संस्कारवान बनाने एवं उसमें आत्मशक्ति और दिव्यता के गुणों को जाग्रत् करने के प्रशंसनीय प्रयास हुए। जन्म शताब्दी वर्ष में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में बहिनों की सहभागिता के संदर्भ में भी मार्गदर्शन दिया गया।

कार्यक्रम का संचालन गुना की श्रीमती गीता योगी एवं उनकी सहयोगी बहिनों के द्वारा किया गया। भारतीय वीरांगनाओं का उदाहरण देते हुए उन्होंने बताया कि नारी शक्ति का उत्कर्ष किस प्रकार होगा तथा उसकी क्या उपयोगिता है। श्रीमती ज्ञान नामदेव जी ने संस्कारों की परम्परा के पुनर्जागरण तथा सुसंस्कृत पीढ़ी के निर्माण पर चर्चा की। श्रीमती उमा शर्मा ने मीडिया के दुष्प्रभाव से किशोरवय की बालिकाओं में आ रहे मानसिक भटकाव और उससे बचाव के उपायों पर प्रेरक मार्गदर्शन प्रदान किया। श्रीमती मिथिलेश श्रीवास्तव ने बाल संस्कारशाला के द्वारा भावी पीढ़ी को संस्कारवान बनाने पर चर्चा की।

कार्यशाला में अनूपपुर की जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाल्मीक राठौर, गायत्री शक्तिपीठ अमरकंटक के समन्वयक श्री के.एन. योगी, सह-समन्वयक श्री जे.पी. राठौर, जिला समन्वयक अनूपपुर, श्री एस.के. सोनी, चेतना केन्द्र व्यवस्थापक श्री ललन सिंह राठौर, मुख्य ट्रस्टी श्री वृन्दावन पटेल आदि गणमान्यों का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

अनूपपुर में नारीशक्ति का नेतृत्व कर रही देवियाँ

योग एवं व्यक्तित्व विकास कार्यक्रम

बरघाट। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार, बरघाट के प्रयास से औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान, बरघाट में 16 अक्टूबर को योग एवं व्यक्तित्व विकास पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इससे बड़ी संख्या में स्कूली बच्चे लाभान्वित हुए।

इस अवसर पर अंतरराष्ट्रीय योग इन्स्ट्रक्टर श्री योगी नूतेन्द्र पटले जी उपस्थित हुए। उन्होंने कहा कि योगाभ्यास हमारे शरीर को स्वस्थ रखते हुए आयु को बढ़ाता है, हमारी शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आत्मिक शक्ति का विकास करता है, शरीर की रोगनाशक क्षमता का विकास करता है तथा व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाता है। समवर्ती, भ्रामरी, नाड़ी शोधन इत्यादि प्राणायाम के साथ खेचरी मुद्रा, सोऽहम् साधना एवं हंसयोग ध्यान का अभ्यास कराया गया। लाफ्टर योग का अभ्यास कराकर सभी को उल्लास एवं प्रसन्नता से भर दिया।

गायत्री परिवार के श्री हेमराज बघेल जी ने 21 नवंबर को होने वाली भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में अधिक से अधिक बच्चों को सम्मिलित करने का निवेदन किया। इस अवसर पर श्री चैन सिंह टेमरे, भगवती बिसेन, औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के प्राचार्य ऐलन मैकनिस, श्री पीयूष तुरकर एवं समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थिति हुए।

जन्म शताब्दी समारोह के लिए वाहन और वाहन चालकों की आवश्यकता है

अखण्ड दीप के प्राकट्य और परम वंदनीया माताजी के जन्म शताब्दी वर्ष समारोहों का शुभारंभ वसंत पंचमी-2026 पर शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार में होने जा रहे प्रथम जन्म शताब्दी समारोह के साथ हो रहा है। 21 से 23 जनवरी 2026 की तारीखों में प्रस्तावित यह सम्मेलन अखिल विश्व गायत्री परिवार के विभिन्न संगठनों से जुड़े कर्मठ कार्यकर्त्ताओं का विराट वैश्विक सम्मेलन है। इसमें पूरे देश से ही नहीं, पूरी दुनिया में गायत्री परिवार के विस्तार में अग्रणी सहयोग दे रहे नैष्ठिक कार्यकर्त्ता भाग लेंगे। आगामी वर्षों में जो जन्मशताब्दी समारोह आयोजित होंगे, यह उनका संकल्प और प्रशिक्षण सम्मेलन है।

जनवरी माह में हरिद्वार में आयोजित होने जा रहे विराट समारोह की तैयारियाँ कार्यक्रम स्थल पर 15 नवम्बर 2025 से आरंभ हो गई हैं। जमीन की सफाई, टैंट, विद्युत व्यवस्था से लेकर यज्ञशाला निर्माण जैसे कार्य क्रमशः होंगे। निर्माण कार्य के समय तथा मुख्य कार्यक्रम में परिजनों के आवागमन की व्यवस्था के लिए बड़ी संख्या में तरह-तरह के वाहनों की आवश्यकता होगी। परिजनों से निवेदन है कि वे इन कार्यों के लिए अपने वाहन और चालक सहित समयदान करें।

- **मालवाहक और सवारी वाहक दोनों ही तरह के वाहनों की आवश्यकता है। दुपहिया वाहनों की भी आवश्यकता होगी।**
- **परिजन अपना वाहन स्वयं चलाते हुए समयदान कर सकते हैं।**
- **चालक, जिनके पास अपना वाहन नहीं है, वे भी समयदान कर सकते हैं।**
- **जिनके पास अच्छी स्थिति में वाहन हों, वे अपने वाहन भी इस कार्यक्रम के लिए शांतिकुञ्ज भेज सकते हैं।**
- **चालक का ड्राइविंग लाइसेंस, गाड़ी का रजिस्ट्रेशन, इंश्योरेंस, फिटनेस सर्टिफिकेट आदि सभी दस्तावेज पूर्ण हों, यह सुनिश्चित कर लें।**
- **गाड़ी की स्थिति अच्छी हो।**

गुरुकार्य को सफल बनाने के लिए उदारतापूर्वक अपना वाहन शान्तिकुञ्ज भेजिये। कौन-सा वाहन कब से शान्तिकुञ्ज भेजने की स्थिति में हैं या वाहन चालक के रूप में अकेले समयदान करना चाहते हैं, यह जानकारी अविलंब शान्तिकुञ्ज के परिवहन विभाग को दीजिए। प्रत्यक्ष बातचीत करने के पश्चात् ही चालक/वाहन के समयदान के निर्देश दिये जायेंगे।

कृपया संपर्क कीजिए : 9258369553 (श्री अवधेश पांडेय, प्रभारी परिवहन विभाग, शांतिकुञ्ज, हरिद्वार)

गायत्री परिवार के सृजल ने रचा विश्व कीर्तिमान

पांढुरना। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ, पांढुरना की ट्रस्टी श्रीमती मालती जवने के 16 वर्षीय नाती, अमरावती के रहने वाले सृजल प्रवीण कोहले ने कन्याकुमारी से कश्मीर तक 3505.5 कि.मी. की यात्रा को साइकिल से 127 घंटे, 30 मिनट (12 दिन 12 घंटे) में पूर्ण करके गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया। विदर्भ महाविद्यालय में पढ़ने वाले कक्षा 12वीं के साइंस के विद्यार्थी सृजल ने अपनी यह यात्रा 6 अक्टूबर को प्रारम्भ की थी तथा 18 अक्टूबर को श्रीनगर के ऐतिहासिक लाल चौक पर पहुँच कर विश्व कीर्तिमान बनाकर पूर्ण की।

सृजल गायत्री उपासक है। उसे गायत्री उपासना, साधना के संस्कार अपने माता-पिता एवं नाना-नानी से मिले हैं, जो गायत्री परिवार के सक्रिय सदस्य हैं। साइकिलिंग से विश्व कीर्तिमान के सृजन के संकल्प में उपासना की ऊर्जा और गुरुदेव के ओजस्वी विचारों की प्रेरणा का भी विशिष्ट योगदान रहा है।

सृजल अपनी साइकिल के साथ मंजिल की ओर और श्रीनगर के लाल चौक पर विजयी मुद्रा में

गायत्री परिवार के स्थानीय परिजनों ने सृजल की इस उपलब्धि पर प्रज्ञा साहित्य भेंट कर उनका सम्मान किया तथा उनके उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना की। गुरुदेव के विचारों के सान्निध्य में विश्व मानवता के उत्थान के लिए निरंतर सक्रिय रहने की प्रेरणा भी सृजल को दी।

शिक्षण संस्थानों में व्यक्तित्व विकास कार्यशालाएँ

आलमबाग, लखनऊ। उत्तर प्रदेश

आलमबाग, लखनऊ में भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के संयोजक श्री अरुण कुमार श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में विद्यालयों में जाकर छात्रों के व्यक्तित्व विकास की प्रेरणाएँ देने का अत्यंत सफल एवं लोकप्रिय अभियान चल रहा है। सितम्बर माह में कर्नल एस.एन.मिश्रा ओ.बी.ई. मेमोरियल स्कूल, साउथ सिटी, आर.पी.एस. पब्लिक इंटर कॉलेज, हिन्द नगर बगिया, गुरु नानक विद्यालय गर्ल्स इंटर कॉलेज, चन्दरनगर, टेक्निकल इंटरमीडिएट कॉलेज, विजय नगर में इस प्रकार के प्रेरणाप्रद कार्यक्रम आयोजित किए गए। इनमें बच्चों के साथ प्रश्नोत्तरी भी हुई, सही उत्तर देने वाले विद्यार्थियों को गायत्री मंत्र लेखन पुस्तिका एवं मैडल देकर सम्मानित किया गया।

श्री जी.एस. बाजपेई, श्री जी.एस.शर्मा, श्री राहुल मिश्रा, डॉ. एस.एन. सचान एवं अन्य परिजनों के सहयोग से यह कार्यक्रम सम्पन्न हुए। श्री आशीष पाण्डेय जी प्रेरक प्रज्ञा गीतों को बच्चों एवं शिक्षकों ने बहुत पसंद किया।

यज्ञ में सम्मानित होंगे बच्चे

सभी विद्यार्थियों को 24 नवम्बर को लखनऊ में होने वाले 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में आमंत्रित किया गया। इस यज्ञ में भा.सं.ज्ञा.प. में उत्तीर्ण छात्रों एवं लेखन प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त करने वाले छात्रों को सम्मानित किया जाएगा।

लखनऊ में प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेताओं का सम्मान

मोबाइल के दुरुपयोग से बचने की प्रेरणा

कोरबा मंडल। छत्तीसगढ़

कोरबा मंडल में 'दिया' के क्रांतिकारी सृजन सैनिकों के माध्यम से स्कूलों, कॉलेजों, एनएसएस कैम्प्स इत्यादि में 200 से अधिक डिवाइन वर्कशॉप्स का आयोजन किया जा चुका है। इनके प्रभाव से बच्चे गायत्री परिवार द्वारा चलाए जा रहे समाज सेवा के विभिन्न अभियानों में भाग लेने लगे हैं। हाल ही में कोरबा में एक वर्कशॉप हुई, जिसमें 300 बच्चों ने भाग लिया। सभी छात्रों एवं युवाओं को पूज्य गुरुदेव के विचारों को समझने एवं आत्मसात करने की प्रेरणा दी गई। 'दिया' प्रतिनिधि ने अपने संबोधन में कहा कि आज जो युवा मोबाइल गेम्स और रील्स बनाने के जुनून में अपने भविष्य को अंधकारमय बना रहे हैं, उन्हें जल्द ही इसके मोह जाल से निकलना होगा। आयोजनों की सफलता में दिया छत्तीसगढ़ प्रांत विस्तारक कन्हैया चौहान एवं अन्य क्रांतिकारी युवाओं का विशेष सहयोग प्राप्त हो रहा है।

मुंगेली। छत्तीसगढ़

दिनांक 14 अक्टूबर को मुंगेली जिले के राजीव गाँधी कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय लोरमी में व्यक्तित्व निर्माण युवा शिविर आयोजित हुआ। इसमें जीवन लक्ष्य, कैरियर निर्माण, व्यसन मुक्ति एवं राष्ट्र जागरण में युवा शक्ति का नियोजन आदि विषयों पर छात्र/छात्राओं का मार्गदर्शन किया गया। इन गतिविधियों में शिक्षकों ने भी भाग लिया और गायत्री परिवार के प्रयासों की भूरि-भूरि सराहना की। सभी शिक्षकों एवं सभी विद्यार्थियों को युग साहित्य एवं व्यसन मुक्ति पंपलेट दिया गया।

यह कार्यक्रम प्रांतीय टोली के सुरेंद्र गुप्ता, योगेश साहू, राजेश देवांगन, सुश्री रोमा साहू और टीका राम जी ने संपन्न कराया। इसकी सफलता में शचीन्द्र साहू, अश्विनी मरावी, शालिनी कौशिक कश्यप, इंद्रजीत ध्रुव, श्रीधर कश्यप, नोहर राजपूत, राजेन्द्र ध्रुव, सुखराम साहू, भूपेंद्र साहू, देवानंद साहू आदि ने अपना सहयोग रहा।

प्रज्ञा पुराण कथा एवं दाम्पत्य सम्मेलन

सहजनवाँ, गोरखपुर। उत्तर प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ सहजनवाँ के द्वारा 7 अक्टूबर से 13 अक्टूबर की तिथियों में पावन प्रज्ञा पुराण कथा का शानदार आयोजन किया गया। प्रतिदिन होने वाले हुए योग, यज्ञ और संस्कार के कार्यक्रमों का बड़ी संख्या में परिजनों के साथ आम श्रद्धालुओं ने लाभ लिया। श्रीमती नीतू सिंह ने पूरे विधि-विधान से वेद स्थापन संस्कार करवाया, जिसने सभी के लिए अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किया।

दाम्पत्य सम्मेलन : 40 दम्पतियों ने भाग लिया

12 अक्टूबर को आयोजित दाम्पत्य सम्मेलन में 40 दम्पत्तियों ने भाग लिया। उन्हें संस्कारवान पीढ़ी के निर्माण के लिए प्रेरणाएँ दी गईं। गायत्री परिवार, बस्ती के भाई

विधायक श्री प्रदीप शुक्ला जी पुस्तकें देखते हुए

गुरुदेव के साहित्य से प्रभावित हुए विधायक, समस्त साहित्य ब्रह्मभोज में उपलब्ध कराने का निश्चय किया

जगराम ने दाम्पत्य जीवन की प्रतिज्ञाएँ दोहरवाईं। इस सम्मेलन के आयोजन में आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी की संयोजिका बहिन अर्चना मिश्रा की विशेष भूमिका रही।

गुरुदेव के साहित्य से प्रभावित हुए विधायक

कार्यक्रम स्थल पर पुस्तक मेले का आयोजन भी किया गया था। स्थानीय विधायक श्री प्रदीप शुक्ला जी ने भी पुस्तक मेले का भ्रमण किया और गुरुदेव की पुस्तकों से बहुत प्रभावित हुए। पुस्तकें देखने के बाद उन्होंने सम्पूर्ण प्रज्ञा साहित्य ब्रह्मभोज मूल्य पर उपलब्ध कराने का निश्चय किया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम श्री मान सिंह जी की टोली ने सम्पन्न कराया। आयोजन की सफलता में गायत्री शक्तिपीठ सहजनवाँ के परिव्राजक राजेन्द्र पाण्डेय, मुख्य ट्रस्टी श्री माता प्रसाद सिंह, श्री हृदय नारायण सिंह, श्री मनीष मर्दा, श्री चन्द्रशेखर मौर्य के अतिरिक्त अनेकों गायत्री परिजनों का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ

युग निर्माण के उत्सव के रूप में मनाएँ अखण्ड दीप एवं प.वं माताजी की जन्मशताब्दी

मोहाली एवं शिमला में आयोजित कार्यकर्त्ता सम्मेलनों में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने किया मार्गदर्शन

जन्मशताब्दी के उल्लास को संगठित प्रयासों से सृजनात्मक दिशा देने के लिए पश्चिमोत्तर जोन में दो बड़े कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित हुए। मोहाली में आयोजित सम्मेलन में पंजाब, चंडीगढ़ और हरियाणा के कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। हिमाचल प्रांत के कार्यकर्त्ताओं का सम्मेलन राजधानी शिमला में आयोजित हुआ। दोनों सम्मेलनों को अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा आदर्श आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने मुख्य रूप से संबोधित किया। पश्चिमोत्तर जोन प्रभारी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री वीरेन्द्र तिवारी, श्री जयराम मोटलानी और श्री शालिग्राम अत्रि की विशेष उपस्थिति रही। शान्तिकुञ्ज के युगगायक श्री ओंकार पाटीदार, श्री नारायण रघुवंशी तथा श्री बसंत यादव की टोली ने अपने ओजस्वी गीतों से श्रोताओं के श्रद्धा, समर्पण एवं मनोबल को कई गुना बढ़ा दिया।

मोहाली में कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित करते आद. डॉ. चिन्मय जी

मोहाली। पंजाब

मोहाली में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने जन्मशताब्दी-2026 की विशेषताओं और उससे जुड़े परिजनों के दायित्वों की चर्चा की। उन्होंने परिजनों से आह्वान किया कि वे अखण्ड दीप एवं परम वंदनीया माताजी की जन्मशताब्दी को लोकमंगल एवं युग निर्माण के उत्सव के रूप में मनाएँ।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने परिजनों को 'व्यक्ति के अंदर के अंधकार को कैसे करें दूर'- विषय पर संबोधित किया। उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति, हमारे विचार संपूर्ण मानवता के लिए हितकारी हैं। उन्होंने कहा कि अभी भारतीय संस्कृति को जगाना शेष है, भारतीय अध्यात्म को जगाना शेष है। जब यह ज्योति पुनः प्रज्वलित होगी, तभी विश्व का सच्चा कल्याण संभव होगा।

श्रोतागण अपने युवा आदर्श की प्रेरणाओं से अभिभूत थे। उन्होंने युगधर्म की साधना में पूर्ण समर्पण के साथ योगदान देने का संकल्प व्यक्त किया।

एक आध्यात्मिक घोषणा पत्र है हमारी वसीयत और विरासत

डॉ. चिन्मय जी ने पू. गुरुदेव की अनुपम कृति 'हमारी वसीयत और विरासत' की विशेष चर्चा की। उन्होंने कहा कि यह ग्रंथ युग परिवर्तन की दिशा में एक आध्यात्मिक घोषणापत्र के समान है, जिसके अध्ययन से अध्यात्म और धर्म के वास्तविक स्वरूप का पता चलता है।

संसार में आशा, साहस, संवेदनाओं का संचार करें

शिमला। हिमाचल प्रदेश

शिमला में आयोजित हिमाचल प्रदेश के कार्यकर्त्ताओं के सम्मेलन को संबोधित करते हुए आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा बताये सूत्र-'सुख बाँटें, दुःख बँटायें, अपनी रोटी मिल-बाँटकर खाएँ' का विशेष रूप से उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि यही वह भावना है जो मनुष्य को देवत्व की ओर अग्रसर करती है और सारी दुनिया को स्वर्ग बनाने का मार्ग प्रशस्त करती है।

जन्मशताब्दी वर्ष का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि यह मनुष्य के सौभाग्य का समय है—एक ऐसा अवसर जब वह स्वयं में छिपे देवत्व को प्रकट कर सकता है। आज के इस विकराल और वीभत्स समय में, जब भय और असुरक्षा की भावना मनुष्य के भीतर घर कर गई है, हम अपने अंतःकरण के प्रकाश को जगाएँ और संसार में आशा, साहस एवं संवेदनाओं का संचार करें।

ज्योति कलश रथ यात्रा

डॉ. पण्ड्या जी ने ज्योति कलश रथ यात्रा की ओर विशेष ध्यान आकर्षित किया। उन्होंने बताया कि यह अभियान प्रत्येक घर और प्रत्येक हृदय में दिव्यता की ज्योति प्रज्वलित करने का प्रतीक है। आप इस अभियान को भरपूर उत्साह, श्रद्धा और एकता के साथ आगे बढ़ाएँ।

ज्योति कलश रथ को रवाना करते शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

आपदा पीड़ितों को श्रद्धांजलि

डॉ. चिन्मय जी ने विगत दिनों हिमाचल प्रदेश में आई प्राकृतिक आपदा के कारण प्रभावित लोगों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की। इस आपदा में हताहत हुए लोगों को एक मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई।

गायत्री चेतना केंद्र, गुसान में कार्यकर्त्ताओं से संवाद

शिमला सम्मेलन से पूर्व आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी शिमला स्थित गायत्री चेतना केंद्र, गुसान में पहुँचे। वहाँ पूरे प्रदेश से पधारे गायत्री परिजनों से अत्यंत स्नेहिल भेंट एवं संवाद किया। उन्होंने कहा कि हम सब एक ही परिवार के अंग हैं। गुरुदेव की कृपा से यह पारिवारिक भावना ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति है। परिजनों ने युग निर्माण आंदोलन के उद्देश्यों को हिमालय की भाँति अडिग संकल्प से आगे बढ़ाने का आश्वासन दिया।

शिमला में आयोजित कार्यकर्त्ता सम्मेलन में भाग लेते परिजन

आत्मजागृति का केन्द्र हैं गायत्री शक्तिपीठें

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने मोहाली में गायत्री शक्तिपीठ पहुँचकर दर्शन-प्रणाम किया, फिर वहाँ उपस्थित परिजनों को संबोधित किया। उन्होंने शक्तिपीठों को आत्मजागृति के केन्द्र बताते हुए कहा कि शक्तिपीठें केवल उपासना का स्थल नहीं हैं, यह आत्मोद्धार, साधना और लोकमंगल की प्रेरणा के केंद्र हैं। उन्होंने परिजनों को साधना, सेवा और स्वाध्याय के माध्यम से अपने जीवन को दिव्य आदर्शों से आलोकित करने तथा युग निर्माण की प्रक्रिया में सक्रिय योगदान देने की प्रेरणा दी।

दादा गुरुदेव की प्रतिमा का अनावरण

गायत्री शक्तिपीठ मोहाली पहुँचने पर परिजनों ने गुरुसत्ता के प्रतिनिधि का भव्य स्वागत किया। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने शक्तिपीठ पर दादा गुरुदेव की प्रतिमा का अनावरण भी किया। डॉ. चिन्मय जी की आत्मीयता पाकर अभिभूत कार्यकर्त्ताओं ने अपने जीवन में पूज्य गुरुदेव के विचारों को मूर्त रूप देने का संकल्प व्यक्त किया।

गायत्री शक्तिपीठ मोहाली में वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं का सम्मान

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

श्री हरेशभाई कांतिलाल कंसारा

मोडासा, अरवल्ली। गुजरात : अरावल्ली के जिला समन्वयक एवं गायत्री चेतना केंद्र मोडासा के संस्थापक श्री हरेशभाई कांतिलाल कंसारा का 30 अक्टूबर 2025 को 65 वर्ष की आयु में निधन हो गया। सन् 1984 में परम पूज्य गुरुदेव से दीक्षा लेने के बाद से ही वे मिशन की सेवाओं में पूरी तरह से समर्पित हो गए थे। वे एक अच्छे फोटोग्राफर और पेंटर भी थे, जिन्होंने परम वंदनीया माताजी के आशीर्वाद से श्रद्धांजलि समारोह, अश्वमेध यज्ञ और देश-विदेशों में हुए कार्यक्रमों में अनेक चित्र-होर्डिंग बनाए। गायत्री चेतना केंद्र मोडासा की स्थापना और गायत्री शक्तिपीठ शामलाजी की सक्रियता में उनका अग्रणी योगदान रहा। उनके प्रसन्नचित्त, स्नेहिल स्वभाव, सादगी और समर्पण से सभी बहुत प्रभावित थे।

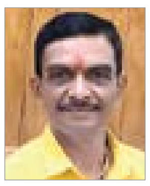

श्री नवनीतभाई मणिभाई पटेल

सरसा, आणंद। गुजरात

गायत्री शक्तिपीठ सरसा एवं आणंद, पूर्व में खेड़ा जिला के प्रतिष्ठित प्राणवान कार्यकर्त्ता श्री नवनीतभाई मणिभाई पटेल 83 वर्ष की आयु में 28 अक्टूबर 2025 को परम पूज्य गुरुदेव-माताजी की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गए। वे युवावस्था से ही अत्यंत आध्यात्मिक प्रकृति के थे। उनके गुरु श्री नारायण बापू ने उनसे कहा था कि तुम्हारे वास्तविक गुरु मथुरा के पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी हैं। तब वे मथुरा आए और गुरुदेव-माताजी के प्रति पूरी तरह समर्पित हो गए। सन् 1981 में परम पूज्य गुरुदेव की गुजरात यात्रा के समय वे परछाई की तरह उनके साथ रहे। वे बड़े सौभाग्यशाली थे, जिनके घर स्वयं महाकाल स्वरूप गुरुदेव-माताजी रुके थे।

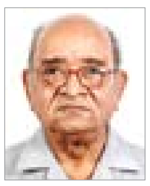

पंजाब नेशनल बैंक की राष्ट्रीय बिजनेस कॉन्फ्रेंस

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने अधिकारियों को आत्मिकी, संवेदनशीलता और सेवाभावना के विकास की प्रेरणा दी

सम्पूर्ण भारत की पीएनबी शाखाओं के वरिष्ठ अधिकारी एवं 103,000 कर्मचारी भी ऑनलाइन जुड़े

नई दिल्ली। 14 एवं 15 अक्टूबर 2025 को नई दिल्ली स्थित वेलकम होटल (आईटीसी) में पंजाब नेशनल बैंक द्वारा "Grow, Innovate and Excel" विषय पर दो दिवसीय जोनल मैनेजर्स एण्ड सर्कल हेड्स बिजनेस कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया गया था। इस सम्मेलन में संपूर्ण भारतवर्ष के शीर्ष अधिकारीगण उपस्थित थे। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी इस सम्मेलन में मुख्य अतिथि वक्ता के रूप में आमंत्रित थे।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने 'मानव उत्कृष्टता' विषय से अपना संदेश देते हुए कहा कि जीवन में उत्कृष्टता केवल बाहरी संसाधनों का परिणाम नहीं होती। यह उत्कृष्टता आत्मिकी, संवेदनशीलता और सेवाभावना के विकास से प्राप्त होती है। उन्होंने सभी को आध्यात्मिक जीवन शैली अपनाते हुए मानवीय जीवन मूल्यों की साधना करने के लिए प्रेरित किया।

यह सम्मेलन बैंक के शीर्ष नेतृत्व की गरिमामयी उपस्थिति में संपन्न हुआ। श्री अशोक चंद्रा, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी; श्री एम. परमशिवम, कार्यपालक निदेशक; श्री बी. पी. महापात्रा, कार्यपालक निदेशक; तथा श्री डी. सिरेंद्रन, कार्यपालक निदेशक सहित मुख्य महाप्रबंधक, महाप्रबंधक, जोनल मैनेजर्स, सर्कल हेड्स एवं एलसीबी हेड्स ने देशभर से सहभागिता की।

प्रोजेक्ट पलाश

आद. डॉ. चिन्मय जी ने पंजाब नेशनल बैंक के राष्ट्रव्यापी वृक्षारोपण अभियान 'प्रोजेक्ट पलाश' का शुभारंभ भी किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी श्री अशोक चंद्रा, प्रबंध निदेशक को युग निर्माण सत्संकल्प का चित्र भेंट करते हुए

अण्डमान में सक्रिय नवयुग के सृजन सेनानियों में नई ऊर्जा का संचार

आप गुरुदेव की चेतना हैं, आप ही के माध्यम से गुरुदेव की ऊष्मा प्रवाहित होगी, लोगों के जीवन में बदलाव आएगा।

श्री विजयपुरम। अण्डमान

अखिल विश्व गायत्री परिवार, शान्तिकुञ्ज हरिद्वार के प्रतिनिधि एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 24 से 26 अक्टूबर 2025 तक तीन दिवसीय अण्डमान प्रवास पर रहे। जन्मशताब्दी जैसे महत्त्वपूर्ण समय में अपने गुरुधाम से आए प्रमुख मार्गदर्शक को अपने बीच पाकर सभी गद्‌गद थे। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री नरेन्द्र सिंह ठाकुर, संतोष कुमार महतो और आलोक पाण्डे भी उनके साथ थे।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों का एयरपोर्ट पर भव्य स्वागत बाल संस्कार शाला के बच्चे भी स्वागत के लिए पहुँचे

भावपूर्ण स्वागत हुआ

श्री विजयपुरम एयरपोर्ट पर पहुँचने पर परिजनों ने पुष्पगुच्छ एवं लोक परंपरा के स्वागत-वंदन गीतों के साथ आदरणीय डॉ. चिन्मय जी का अत्यंत भावपूर्ण स्वागत किया। उन्होंने वहाँ उपस्थित मिशन के सभी समर्पित परिजनों से आत्मीय भेंट की और जन्मशताब्दी वर्ष में गुरुदेव के विचारों को जन-जन तक, घर-घर तक पहुँचाने के लिए प्रेरित किया।

गायत्री चेतना केन्द्र का लोकार्पण

प्रवास के पहले दिन आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने श्री विजयपुरम में गायत्री चेतना केन्द्र, देलानीपुर का लोकार्पण किया। इस अवसर पर उपस्थित श्रद्धावान परिजनों के पुरुषार्थ का अभिनंदन करते हुए उन्होंने कहा कि आप लोग गुरुदेव की चेतना हैं, आप ही के माध्यम से गुरुदेव की ऊष्मा गंगा-यमुना की तरह प्रवाहित होगी, जिससे लोगों के जीवन में बदलाव आएगा। युगशक्ति गायत्री की दिव्य ऊर्जा का प्रवाह पूरे नगर में जन-जन तक पहुँचेगा।

गायत्री चेतना केन्द्र देलानीपुर का लोकार्पण करते आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने देवपूजन, ध्वजारोहण एवं साहित्य स्टॉल का अवलोकन किया। सभी परिजनों को जन्मशताब्दी वर्ष-2026 की विशेषता एवं दायित्वों का बोध कराया और सभी लोगों को इस विलक्षण अवसर का भरपूर लाभ उठाने का सौभाग्य मिले, ऐसी शुभकामनाएँ प्रदान कीं।

घर-घर पहुँचकर स्नेहवर्षा की

श्री विजयपुरम स्थित गायत्री चेतना केंद्र, कालीकट तथा वहाँ के परिजनों के घर जाकर जन्मशताब्दी कार्यक्रम हेतु आमंत्रित किया और देव स्थापना का चित्र प्रदान किया। सभी युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव के विचार, प्यार एवं चेतना की सघन अनुभूतियों से भावविभोर हुए।

जिरकाटाँग जनजातीय क्षेत्र की नगर-नगर जनसंपर्क यात्रा

दक्षिण से उत्तर अण्डमान तक की यात्रा

> जिरकाटाँग भारत की कुछ ही चुनिंदा जनजातियों के संरक्षण केंद्रों में एक है, जो जारवा जाति के संरक्षण के लिए जाना जाता है।

यह यात्रा पूरे अण्डमान के प्रमुख शहरों में जनसंपर्क हेतु थी। श्रीविजयपुरम, दक्षिण अण्डमान टापू से अण्डमान ट्रंक रोड होते हुए दक्षिण से उत्तर अंडमान की एक लम्बी यात्रा करते हुए जिरकाटाँग चेकपोस्ट पहुँचे। जिरकाटाँग चेकपोस्ट से जारवा ट्राइबल बेल्ट होते हुए शिप के माध्यम से खाड़ी पार कर मध्य अंडमान के मिडल स्ट्रेट, बाराटांग, साउथ क्रीक कृष्ण मंदिर, साउथ क्रीक रिसॉर्ट, अंडाजिक तथा कदमतला में पहुँचे। वहाँ पर पूजा कर उपस्थित श्रद्धालुओं एवं परिजनों को शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार के जन्मशताब्दी महोत्सव में आने का निमंत्रण दिया। बड़ी संख्या में गणमान्यों से भेंट हुई, उन्हें परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य एवं देवस्थापना चित्र प्रदान किये गए।

संपर्क अभियान : अगले क्रम में मध्य अंडमान के कौशल्यानगर तथा दो मुख्य नगर-रंगत और मायाबंदर में परिजनों से आत्मीय भेंट कर परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य तथा देव स्थापना चित्र प्रदान किये। साथ ही क्षेत्र के प्रसिद्ध काली मंदिर, नींबूतला में समस्त जनों के हित हेतु मंगलकामना की तथा प्रबंधक मंडल को परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य प्रदान किया। परिजनों में जन्मशताब्दी के निमित्त नवसंकल्प पल्लवित हुए।

प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन

गुरुदेव के विचारों के सान्निध्य में युगधर्म का बोध कराया

दिगलीपुर। अण्डमान

तीन दिवसीय अण्डमान प्रवास के अंतर्गत आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी अण्डमान के दूसरे बड़े शहर दिगलीपुर पहुँचे, जहाँ सुभाष ग्राम पंचायत हॉल में उनका अत्यंत प्रेरणादायी उद्‌बोधन हुआ। वहाँ के विशिष्ट प्रबुद्धवर्ग एवं भावनाशील परिजनों को संबोधित करते हुए आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा कि मनुष्य जीवन देवताओं के लिए भी दुर्लभ है। व्यक्ति इसका मूल्य पहचान ले तो ईश्वरप्रदत्त दायित्व को सँभालना सरल हो जाता है और जीवन सफल हो जाता है। परम पूज्य गुरुदेव ने इसी बात को ध्यान में रखकर लोगों को गायत्री और यज्ञ को जीवन में उतारने की प्रेरणा दी है, मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण का अभियान चलाया है। इस कार्यक्रम में श्री सिंघाराम जी, प्रमुख, दिगलीपुर ग्राम पंचायत तथा श्री उत्तम साहा जी, उद्योगपति की विशेष उपस्थिति रही। प्रबुद्ध जनसभा के पश्चात् आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने वहाँ के परिजनों के घर जाकर आत्मीय भेंट की और परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य प्रदान किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी दिगलीपुर में आयोजित प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन को संबोधित करते हुए

सेल्यूलर जेल में पहुँचकर स्वतंत्रता सेनानियों को दी श्रद्धांजलि

तीन दिवसीय अण्डमान प्रवास का अंतिम कार्यक्रम श्री वीर सावरकर जी एवं अग्रिम स्वतंत्रता सेनानियों के त्याग-बलिदान की साक्षी भूमि सेंट्रल सेलुलर जेल में था। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने वहाँ पहुँचकर स्वतंत्रता सेनानियों के पावन स्मारकों पर श्रद्धा-सुमन अर्पित किए।

इससे पूर्व सेंट्रल सेलुलर जेल में पहुँचने पर श्री विनय जी, प्रेसिडेंट, यूनियन ऑफ टूरिज्म अण्डमान-निकोबार ने आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का भावभरा स्वागत किया। डॉ. चिन्मय जी ने उन्हें परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य प्रदान कर शान्तिकुञ्ज आने का निमंत्रण दिया।

श्री विजयपुरम एयरपोर्ट पर भावनाशील परिजनों द्वारा दी गई भावपूर्वक विदाई के साथ अण्डमान का तीन दिवसीय प्रवास सम्पन्न हुआ।

देव संस्कृति के पुनरुत्थान में विशेष भूमिका निभा रही हैं कन्याएँ

कन्या कौशल शिविर

शान्तिकुञ्ज। हरिद्वार

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज में दिनांक 28-30 अक्टूबर में राजस्थान प्रांत का त्रिदिवसीय 'कन्या कौशल प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर' का आयोजन हुआ, जिसमें 300 से अधिक बाल प्रशिक्षिकाओं ने भाग लिया। शिविर का मुख्य उद्देश्य प्रतिभागियों को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास से संबंधित सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना था। विभिन्न सत्रों के माध्यम से बच्चियों में आत्मनिर्भरता, शिक्षा, सुरक्षा एवं संस्कारों को विकसित करने के प्रयास किया गया।

कन्या कौशल शिविर के उद्‌घाटन सत्र को संबोधित करती आदरणीया शेफाली पण्ड्या जी

युग निर्माणी विचार और संस्कारों में ढाली जा रही हैं राजस्थान की सवा लाख कन्याएँ

राजस्थान प्रांत ने जन्मशताब्दी वर्ष में सवा लाख कन्याओं को युग निर्माण योजना की दिशा-धारा में प्रेरित, प्रशिक्षित करने एवं उन्हें देव संस्कृति की गौरवशाली परम्पराओं से परिचित कराने का निर्णय लिया है। इसके लिए प्रांत के हर जिले में प्रशिक्षण और जनजागरण के कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। प्रशिक्षण के लिए पूरे राज्य से कुशल युग निर्माणी कन्याओं का चयन कर उन्हें शान्तिकुञ्ज में विशेष प्रशिक्षण दिलाया जा रहा है।

शान्तिकुञ्ज में इस तरह का यह दूसरा प्रशिक्षण शिविर था, जिसमें 300 कन्याओं ने भाग लिया। ये बालिकाएँ अपने-अपने क्षेत्र में कन्याओं को संगठित कर उन्हें गुरुदेव-माताजी के विचार और संस्कारों में ढालते हुए भारत की सनातन संस्कृति के पुनरुत्थान में अपना विशिष्ट योगदान देंगी। इस अभियान की सफलता में प्रांतीय संयोजक श्री ओ.पी. अग्रवाल जी एवं डॉ. प्रशांत भारद्वाज का विशेष योगदान है, जो इस शिविर में भी कन्याओं के संरक्षक के रूप में साथ थे।

शिविर के प्रथम दिन गायत्री विद्यापीठ की व्यवस्था मण्डल की प्रमुख श्रीमती शैफाली पण्ड्या जी ने कन्याओं का उत्साहवर्द्धन किया। उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के नारी जागरण आन्दोलन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज अत्यंत आवश्यक हो गया है कि हर नारी अपनी संस्कृति की पहचान को बनाए रखे तथा आने वाली पीढ़ी को संस्कारवान बनाए। उन्होंने अपने अभिभावकों के साथ सदैव स्वस्थ संवाद बनाये रखने के लिए सभी बच्चियों को प्रेरित।

श्रद्धेया जीजी के शुभाशीष

शिविर के दूसरे दिन बालिकाओं ने शान्तिकुञ्ज प्रमुख श्रद्धेया शैल जीजी से भेंट करके आशीर्वाद प्राप्त किया। श्रद्धेया जीजी ने प्रशिक्षु बालिकाओं में सामाजिक परिवर्तन के लिए सक्रियता का उत्साह जगाया। उन्होंने कहा कि सकारात्मक सोच, सतत प्रयास और आत्मानुशासन से जीवन में हर लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

भविष्य की नींव रखने का स्वर्णिम अवसर

देसंविवि के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने विद्यार्थी काल को जीवन का स्वर्णिम अवसर बताते हुए किशोरावस्था में सँभलने, सँवरने और बड़े मानवोचित जीवन-लक्ष्य के लिए समर्पित होने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी जीवन में ही भविष्य की नींव रखी जाती है।

शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी, श्री गौरीशंकर सैनी, सुश्री दीनाबेन त्रिवेदी, श्रीमती शालिनी वैष्णव, श्रीमती नीलम मोटलानी, श्रीमती ज्योत्सना मोदी, श्रीमती रश्मि शर्मा, श्रीमती आरती कावड़े इत्यादि ने बालिकाओं का मार्गदर्शन किया।

शिविर में वीडियो प्रेजेण्टेशन के साथ आधुनिक युग की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए साइबर क्राइम के प्रति जागरूकता, मोबाइल और इंटरनेट के सुरक्षित उपयोग, ऑनलाइन धोखाधड़ी से बचाव जैसी महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ दी गईं। शिविर की समाप्ति पर सभी बालिकाओं ने भावुक हृदय एवं अश्रुपूर्ण नेत्रों से अपने-अपने अनुभव साझा किए।

युगचेतना और वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के विस्तारक

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का हीरक जयंती उत्सव

संतों, राजनैतिक हस्तियों सहित गायत्री परिवार के लाखों कार्यकर्त्ताओं ने दी शुभकामनाएँ

विश्व स्तर पर युगचेतना के उन्नायक, परम पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रतिपादित वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के विस्तारक देव संस्कृति विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का जन्म दिवस हर वर्ष 'चेतना दिवस' के रूप में मनाया जाता है। इस वर्ष भी दिनांक 19 अक्टूबर, रूप चतुर्दशी के दिन उसी उत्साह के साथ उनका हीरक जयंती उत्सव मनाया गया। प्रातःकाल सर्वप्रथम समस्त परिवारी जनों एवं शान्तिकुञ्ज के वरिष्ठजनों की उपस्थिति में दीपयज्ञ के साथ जन्मदिवस मनाया गया। इस अवसर पर सभी ने उनके उत्तम स्वास्थ्य, यशस्वी एवं दीर्घ जीवन की प्रार्थना गुरुदेव-माताजी से की।

75वाँ चेतना दिवस

श्रद्धेय डॉक्टर साहब को शुभकामनाएँ देते आदरणीय श्री मृत्युंजय शर्मा जी

> श्रद्धेय ने परिजनों की आत्मीयता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए सभी को पूरे मनोयोग से गुरुकार्यों के लिए समर्पित रहने की प्रेरणाएँ दीं।

तत्पश्चात् शांतिकुञ्ज के अंतेवासी कार्यकर्त्ताओं, देव संस्कृति विश्वविद्यालय व गायत्री विद्यापीठ के अधिकारी, शिक्षक, विद्यार्थी और शिविरार्थियों ने उन्हें कविता, चित्र, शुभकामना संदेश, संस्मरण और पुष्प-गुच्छ के माध्यम से अपनी शुभकामनाएँ प्रदान कीं। शान्तिकुञ्ज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय में आयोजित विविध कार्यक्रमों के माध्यम से उनके जीवन के प्रेरणादायी प्रसंगों को याद किया गया।

देश-विदेश में गायत्री परिवार की शाखाओं में भी श्रद्धेय डॉ. साहब का हीरक जयंती उत्सव मनाया गया। गायत्री परिवार के लाखों साधकों, श्रद्धालुओं एवं युग निर्माण अभियान से जुड़े लोगों ने इस विशेष अवसर पर अपने-अपने स्थानों पर यज्ञ, जप, सेवा कार्य आदि के कार्यक्रम रखे और विभिन्न माध्यमों से श्रद्धेय को अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। संत सम्प्रदाय एवं राजनीति के स्थापित हस्ताक्षरों ने भी श्रद्धेय को अपनी शुभकामनाएँ भेजीं। यूएसए, कनाडा, यूके, स्वीडन आदि अनेक देशों सहित मुंबई, दिल्ली, दक्षिण भारत सहित भारतवर्ष के प्रायः सभी प्रांतों से उन्हें शुभकामना संदेश प्राप्त हुए।

राष्ट्र की सुख-समृद्धि के लिए गोसंवर्धन एवं संरक्षण के संकल्प लिए

गोवर्धन पूजन

देव संस्कृति विश्वविद्यालय स्थित गौशाला परिसर में 22 अक्टूबर को गोवर्धन पूजन का पर्व श्रद्धा, भक्ति एवं उत्साह के साथ तथा पारंपरिक विधि-विधान के अनुसार सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि भगवान श्रीकृष्ण ने गोवर्धन उठाकर जो आदर्श प्रस्तुत किया, वह आज भी प्रासंगिक है। यह पर्व हमें यह प्रेरणा देता है कि जीवन में आने वाली कठिनाइयों से हम साहस, धैर्य एवं सही निर्णयों के माध्यम से बाहर निकल सकते हैं।

डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, श्री शरद जी, श्री गिरि जी गोवर्धन एवं गोमाता का पूजन करते हुए

गोवर्धन पूजन स्थल लोक परंपरा के अनुरूप सुसज्जित था। लोकगीतों पर नृत्य करते हुए अपने आनन्द को अभिव्यक्त किया। देसंविवि के कुलपति श्री शरद पारधी जी और शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी भी आदरणीय डॉ. चिन्मय जी के साथ गोवर्धन पूजा में शामिल हुए। सबने गौमाता की पूजा की और एक-दूसरे को गोबर से तिलक लगाकर राष्ट्र की समृद्धि और सुख, शान्ति के लिए गौसंरक्षण के संकल्प लिए।

शान्तिकुञ्ज एवं देसंविवि में दीपावली उत्साहपूर्वक मनाई गई

गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज एवं देवसंस्कृति विश्वविद्यालय परिसर में ज्योतिपर्व दीपावली उसकी आदर्श प्रेरणाओं के अनुरूप हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया। मुख्य पर्व पूजन श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने किया। इस अवसर पर श्रद्धेया जीजी ने अपने संदेश में कहा कि दीपक केवल एक ज्योति नहीं, बल्कि सेवा, स्नेह और आत्म-प्रकाश का प्रतीक है। आज ज्योतित अंतःकरण वाले ऐसे जीवन दीपों की आवश्यकता है, जो दूसरों के जीवन से अंधकार हटाने में अपनी प्रतिभा एवं संसाधनों का एक अंश समर्पित करते रहें। यही दीपावली पर्व की सच्ची प्रेरणा है।

दीपावली पर्व पूजन में दीपयज्ञ के पश्चात् श्रद्धेयद्वय ने लेखा विभाग प्रभारी श्री हरीश ठक्कर तथा शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी के सहयोग से बही-खातों का पूजन किया। दीपावली पर्व का मर्म समझाते हुए श्रद्धेय डॉक्टर साहब ने कहा कि दीपावली प्रकाश एवं पवित्रता का प्रतीक पर्व है, जो हमें अपने घरों, कार्यस्थलों एवं अंतःकरण को स्वच्छ एवं दिव्य बनाए रखने का संदेश देता है। माँ लक्ष्मी की कृपा प्राप्त करने हेतु हमें अपने विचार, आचरण एवं जीवनशैली को शुद्ध बनाना चाहिए।

दीपावली पर्व पर शान्तिकुञ्ज को सुंदर रंगोलियों और दीपमालाओं से सजाया गया। समस्त अंतेवासियों ने परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के स्मारकों पर दीपदान किये। परस्पर एक-दूसरे को दीपावली पर्व की बधाइयाँ दीं।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी एवं श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी पर्व पूजन के मुख्य यजमान थे। संस्कार प्रकोष्ठ के पुरोहितों और संगीत विभाग के युग गायकों ने अत्यंत भावपूर्ण वातावरण में पूरे विधि-विधान के साथ दीपावली पर्व पूजन संपन्न कराया।

श्रद्धेया जीजी एवं श्रद्धेय डॉक्टर साहब दीपावली पर बही खातों का पूजन करते हुए

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में हुआ राष्ट्रीय सम्मेलन : राष्ट्र निर्माण में मीडिया की भूमिका

मीडिया को अपने देश व धर्म की सुरक्षा के लिए हर संभव प्रयास करते रहना चाहिए।
- श्री दत्तात्रेय होसबोले

मीडिया राष्ट्र निर्माण का सशक्त माध्यम बने।
- डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार में दिनांक 17 अक्टूबर को '**राष्ट्र निर्माण में मीडिया की भूमिका**' विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन हुआ। दिनभर चले इस सम्मेलन में कुल पाँच सत्र हुए, जिनमें वक्ताओं ने भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में अपनी प्राचीन गौरव गरिमा के अनुरूप भूमिका निभाने का आह्वान मीडिया से किया।

उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाहक श्री दत्तात्रेय होसबोले थे। उन्होंने कहा कि राष्ट्र निर्माण में मीडिया की विशेष भूमिका है। स्वाधीनता संग्राम के समय में भी हमारे नायकों ने मीडिया का उपयोग करते हुए जन जागरण में मीडिया की उपयोगिता सिद्ध की थी। आज भी मीडिया को अपने देश व धर्म की सुरक्षा के लिए हर संभव प्रयास करते रहना चाहिए।

युवा आदर्श डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा कि पत्रकारिता समाज का दर्पण ही नहीं, समाज सुधार का सशक्त माध्यम बने। पत्रकारिता में नैतिक मूल्यों का निष्ठापूर्वक पालन होना चाहिए। उन्होंने समाज में व्याप्त असुरता, अनीति और भ्रष्टाचार को जड़ से मिटाने के लिए सृजनात्मकता और सकारात्मकता को प्रोत्साहित करने का आह्वान मीडिया कर्मियों से किया।

सम्मेलन के मंच पर साहित्य विमोचन करते बाँये से क्रमशः श्री योगेन्द्र गिरि, श्री उदय माहूरकर, श्री सुरेश चव्हाण, डॉ. चिन्मय जी, श्री दत्तात्रेय होसबोले, श्री तरुण विजय एवं श्री प्रवीण चतुर्वेदी

उद्घाटन सत्र के गणमान्य अतिथि

सम्मेलन का शुभारंभ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह एवं समारोह के मुख्य अतिथि श्री दत्तात्रेय होसबोले, देसंविवि के कुलपति श्री शरद पारधी, प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, पूर्व सांसद एवं जाने माने पत्रकार श्री तरुण विजय जी सहित अतिथियों ने सामूहिक दीप प्रज्वलन कर किया। प्राच्यम् स्टूडियोज के सीईओ श्री प्रवीण चतुर्वेदी, सुदर्शन चैनल के मुख्य संपादक श्री सुरेश चव्हाण, पूर्व सूचना आयुक्त श्री उदय माहूरकर, पूर्व सांसद श्री तरुण विजय आदि ने भी मीडिया की भूमिका पर अपने विचार साझा किये।

इस सम्मेलन में देश के अनेक राज्यों से आए मीडिया जगत के प्रतिष्ठित व्यक्तियों, लेखकों, फिल्मकारों, पत्रकारों ने भाग लेते हुए अपने विचार साझा किये। विशेषज्ञों ने इस बात पर बल दिया कि आज के समय में मीडिया केवल सूचना का स्रोत नहीं, बल्कि राष्ट्र को दिशा देने वाला एक सशक्त माध्यम बन चुका है। पूरे देश से आए अखिल विश्व गायत्री परिवार के सैकड़ों स्वयंसेवकों ने भी बड़ी संख्या में उपस्थित होकर इस सम्मेलन को वैचारिक व सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध किया। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों ने आधुनिक समय में आध्यात्मिक पत्रकारिता को प्रोत्साहित किया।

अतिथियों का सम्मान

सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने हरिद्वार और देश के विभिन्न नगरों से आए अनेक वरिष्ठ पत्रकारों को सम्मानित किया। कुलपति, प्रति कुलपति जी ने गणमान्य अतिथियों को देसंविवि का प्रतीक चिह्न, गंगाजली, रुद्राक्षमाला आदि भेंट कर सम्मानित किया। अखण्ड ज्योति की आध्यात्मिक यात्रा पर डॉक्यूमेंट्री, संस्कृति संचार, रिनांसा के नये अंक व कई पुस्तकों का विमोचन भी मंचासीन गणमान्यों ने किया।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक**- प्रमोद शर्मा। **पता** :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

प्रज्ञा अभियान संबंधित संपर्क सूत्र :
फोन : 01334-311004
9258369725 (व्हॉट्सएप)
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.org
समाचार प्रेषण : news@awgp.org

Publication date: 12.11.2025
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26